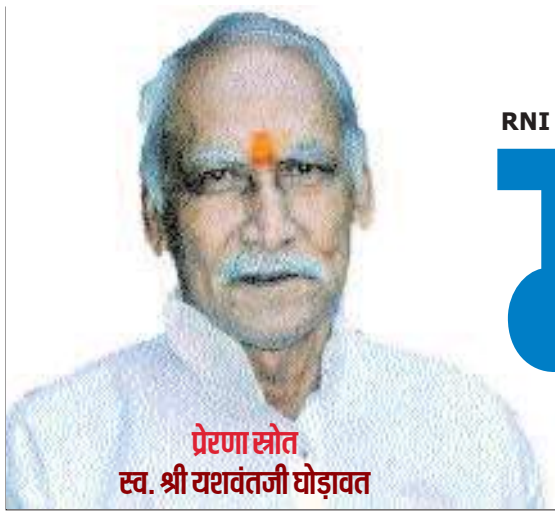
प्रेरणा स्रोत
स्व. श्री यशवंतजी घोड़ावत

RNI No. MPHIN/2018/76422

बेबाकी के साथ.. सच

माही की गूंज

Email-mahikigunj@gmail.com

सुविचार

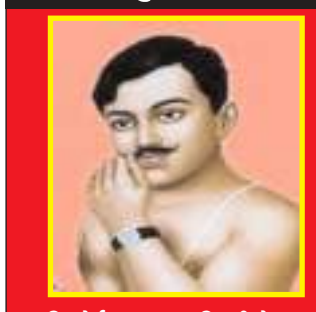

यदि कोई युवा मातृभूमि की सेवा नहीं करता है तो उसका जीवन व्यर्थ है...
चन्द्रशेखर आजाद

वर्ष-02, अंक -42 (साप्ताहिक) | खवासा, गुरुवार 23 जुलाई 2020 | पृष्ठ-8, मूल्य -5 रुपए

आरईएस विभाग ने प्रमुख सचिव के आदेशों की उड़ाई धज्जियां, उपयंत्री बने हुए हैं सहायक यंत्री

माही की गूंज, संजय भटेवरा

झाबुआ ग्रामीण यांत्रिकी विभाग (आरईएस) में भ्रष्टाचार पूरे चरम पर है, मनरेगा के कार्यो में अधिकारियों ने लॉकडाउन की आड़ में भारी मशीनों का उपयोग राणापुर से पेटलावद तक के कार्यो में जमकर उपयोग हुआ। शिकायतो के साथ-साथ मनरेगा में जेसीबी के प्रयोग के वीडियो तक सोशल मीडिया व प्रिंट व इलेक्ट्रानिक मीडिया के माध्यम से उजागर होने के बाद भी कोई कार्यवाही नही हुई, जिसके पीछे जिले के अधिकारियों के साथ-साथ उच्चअधिकारियों की मिलीभगत साफ देखी जा सकती हैं। विभाग के अधिकारियों, उपयंत्री ओर प्रशासन के बीच ऐसी सेटिंग ओर साठ-गांठ है, प्रमुख सचिव तक के आदेश को जिले के अधिकारियो ने हवा में उड़ाकर अपनी साठ-गाठ व भ्रष्टाचार का सबूत दे रहे हैं।

जिले में मनरेगा के कार्यो पर नजर रखने के लिए जनपद स्तर पर सहायक उपयंत्री की व्यवस्था की गई है, लेकिन सहायक यंत्री नही होने की दशा में जिले के ग्रामीण यांत्रिकी विभाग के अधिकारियों ने उपयंत्रियों को सहायक यंत्री बनाकर बाकी के उपयंत्रियों को सहायक यंत्री के नीचे रखा गया। जिले के अधिकांश जनपत में मूल सहायक यंत्री नही होने के कारण उपयंत्री को सहायक यंत्री बना कर बिठाया गया था, पूरे प्रदेश से इस प्रकार की शिकायतो के बाद प्रदेश सचिव ने इस प्रकार की व्यवस्था को समाप्त करने के आदेश जारी किए। व्यवस्था को समझे तो केवल मूल सहायक यंत्री ही इस पद पर रह सकते हैं और सहायक यंत्री नही होने की दिशा में सम्बंधित विकास खण्ड के एसडीओ को इसका चार्ज होना था, लेकिन प्रमुख सचिव के आदेश के बाद भी न तो सहायक यंत्री बनाए गए न ही उपयंत्रियों को हटाया गया न ऐसे जनपत का चार्ज न तो अन्य जनपत के मूल सहायक यंत्री को दिया गया न ही एसडीओ आरईएस को दिए गए। मामले में ग्रामीण यांत्रिकी विभाग के ई सुरेश पंवार से बात की तो पहले तो ई साहब ने ऐसे किसी आदेश की जानकारी नही होना बोल कर गूंज प्रतिनिधि से ही आदेश की कॉपी मांग ली और जब ई साहब को आदेश की कॉपी भेजी गई तो साहब ने फोन अटेंड तक करना मुनासिब नही समझा, लाख प्रयास के बाद देर रात 08 बजे साहब से फोन उठाकर अपनी सफाई पेश कर बताया कि, आदेश के अनुसार किसी भी जनपत में सहायक यंत्री के होते उपयंत्री को सहायक यंत्री का प्रभार नही होना बताकर बात को

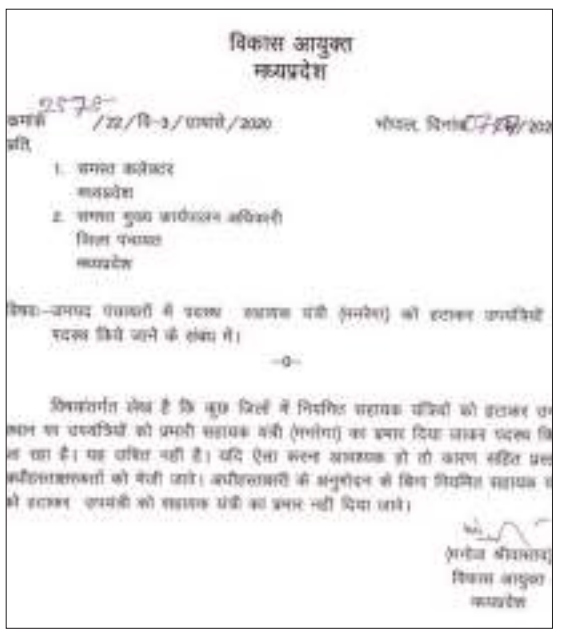
विकास आयुक्त
मध्यप्रदेश

क्रमांक /22/वि-3/पाथारे/2020 भोपाल, दिनांक

प्रति,

1. समस्त कलेक्टर
मध्यप्रदेश
2. समस्त मुख्य कार्यपालन अधिकारी
जिला पंचायत
मध्यप्रदेश

विषय-जनपद पंचायतों में पदस्थ सहायक यंत्री (मनरेगा) को हटाकर उपयंत्रियों पदस्थ किये जाने के संबंध में।

-0-

विषयांतर्गत लेख है कि कुछ जिलों में नियमित सहायक यंत्रियों को हटाकर उनके स्थान पर उपयंत्रियों को प्रभारी सहायक यंत्री (मनरेगा) का प्रभार दिया जाकर पदस्थ किया जा रहा है। यह उचित नहीं है। यदि ऐसा करना आवश्यक हो तो कारण सहित प्रस्ताव कार्यपालनयंत्री को भेजी जावे। कार्यपालनयंत्री की अनुशंसा के बिना नियमित सहायक यंत्री को हटाकर उपयंत्री को सहायक यंत्री का प्रभार नहीं दिया जावे।

(मनोज श्रीवास्तव)
विकास आयुक्त
मध्यप्रदेश

गोल-मोल घुमाकर प्रमुख सचिव के आदेश को घोल कर पी गए। मामले में पेटलावद के यांत्रिकी विभाग के एसडीओ अग्रवाल से बात की तो उन्होंने बताया कि, आदेश का पालन करवाने का काम जिले के अधिकारियों का है, आदेश की जानकारी तो मुझे है लेकिन में अपनी ओर से कुछ नही कर सकता। जिला सीईओ जैन का भी मत जानने की कोशिश की गई तो जिला सीईओ जैन ने भी आदेश की जानकारी नही होने की बात कहते हुए हमसे ही आदेश की कॉपी की मांग ली।

सेटिंगबाज अखण्ड एसडीओ और उपयंत्री बना हुआ है

ग्रामीण यांत्रिकी विभाग में पदस्थ सहायक यंत्री धीरज अखंड को नियम के विरुद्ध झाबुआ विकास खण्ड में एसडीओ बनाकर बिठा दिया गया, जोकि मुल सहायक यंत्री के पद पर होना चाहियें और जिले में ऐसे जनपत भी हैं जहाँ नियम के विरुद्ध सहायक यंत्री के होने के बाद भी उपयंत्री को बिठा रखा है और खुद अखण्ड विभाग में एसडीओ बन कर अपने क्षेत्र में होने वाली मनरेगा की साईड के उपयंत्री को एमबी ओर मस्टर भरने के लिए बिठाकर खुद ही उपयंत्री की भूमिका में होते है। जबकि कागज पर कार्य पर दूसरे उपयंत्री का नाम होता है।

ग्रामीण यांत्रिकी विभाग में चल रहे झोल की पुष्टि केवल इस बात से ही हो जाती है कि, भोपाल से नियुक्त एसडीओ ग्वाला अपनी रेंक से नीचे झाबुआ जनपत में सहायक यंत्री बना रखा है। एसडीओ अखंड झाबुआ विकास खण्ड में होने वाले ज्यादातर कार्य मे खुलकर भारी मशीनों का प्रयोग कर मजदूरों के हक पर डाका मारा गया, कार्य मे उपयोग हो रही जेसीबी मशीन की खबरे आम होने के बाद भी जिला अधिकारियों के कानों पर जु तक नही रेंगी ओर किसी प्रकार की कार्यवाही विभाग की ओर से प्रभारी एसडीओ अखण्ड पर नही की गई। जिले के अधिकारियों की सेटिंग का सबूत कही खोजने की आवश्यकता नही है, क्योंकि विभाग के कई सीनियर उपयंत्री ओर एसडीओ रेंक के अधिकारी उपयंत्री बनकर ही अपनी सेवाएं दे रहे हैं। बताया जा रहा है झाबुआ एसडीओ अखण्ड ओर पेटलावद विकास खंड के उपयंत्री दिलीप भूरिया ने पूरे सिस्टम को अपने पैर की जूती बना रखा है और हर छोटे से छोटे नेता, पत्रकार से लेकर जिले ओर प्रदेश तक के अधिकारियों को समय-समय पर चांदी की जूती पहना कर किसी भी कार्रवाई से बच कर पूरे सिस्टम को अपने आगे नतमस्तक कर रखा है, सेकड़ो शिकायतो के बाद भी कोई बड़ी कार्यवाही इनके के विरुद्ध नही हुई है।

न्यूज ब्रीफ

कॉन्फ्रेंस में चीन पर चर्चा, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह बोले- हर वक्त रहें अलर्ट

नई दिल्ली। वायु सेना के शीर्ष कमांडरों की तीन दिवसीय कॉन्फ्रेंस के दौरान चीन से निपटने के लिए वायुसेना की भूमिका पर चर्चा की गई। इसके साथ ही वायुसेना को लद्दाख में तैनात करने पर भी बात हुई। इस दौरान रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने वायुसेना की तारीफ करते हुए कहा कि, हर वक्त अलर्ट मोड में रहने को कहा है। वायु सेना प्रमुख आरकेएस भदौरिया ने अपने कमांडरों को संबोधित करते हुए कहा कि, भारतीय वायुसेना किसी भी प्रकार के खतरे से निपटने के लिए पूरी तरह से तैयार है। कमांडर कांफ्रेंस के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि, कुछ सबसे चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में भारतीय वायु सेना की भूमिका को राष्ट्र हमेशा याद रखेगा। कोरोना महामारी के लिए देश की प्रतिक्रिया के दौरान उनका योगदान बेहद सराहनीय रहा है।

दुनिया के पांचवे सबसे अमीर व्यक्ति बने मुकेश अंबानी

नई दिल्ली। अरबपति मुकेश अंबानी दुनिया के पांचवे सबसे अमीर व्यक्ति बन गए हैं, बिजनेस मैगजीन फोर्ब्स की अरबपतियों की लिस्ट के मुताबिक मुकेश अंबानी दुनिया के पांचवे सबसे अमीर व्यक्ति हैं, तेल से लेकर टेलीकॉम सहित रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन ने फोर्ब्स की इस सूची में पांचवा स्थान हासिल करने के लिए अमेरिकी निवेशक वॉरेन बफेट को पीछे छोड़ दिया है।

फोर्ब्स के मुताबिक अरबपति मुकेश अंबानी की संपत्ति 75 बिलियन डॉलर है. पिछले महीने ही अंबानी की रिलायंस इंडस्ट्रीज ने अपनी डिजिटल सेवा शाखा, जीओ में लगभग 33 प्रतिशत की हिस्सेदारी को फेसबुक और गूगल सहित प्रमुख निवेशकों को बेचा था, जिसके बाद अब रिलायंस इंडस्ट्रीज ऋण मुक्त हो गई है।

खाद की किल्लत के साथ हो रही कालाबाजारी

माही की गूंज, झाबुआ

266 रुपए में मिलने वाला यूरिया 450 रूपए तक बिक रहा

किसानों के लिए किसी भी स्थिति में खाद की किल्लत नहीं आने दी जाएगी, न हीं इसकी कालाबाजारी करने दी जाएगी, अगर कोई कालाबाजारी करता है तो उसे किसी भी स्थिति में बख्शा नहीं जाएगा की बात भले ही केंद्र सरकार व राज्य सरकार हर-बार कहती है पर यह लोकलुभावन बातें होकर महज किसानों को गुमराह करने वाली बात ही चरितार्थ होकर सामने आती है।

प्रदेश में कुछ झूट-पुट नकली बीज व उर्वरक खाद की कालाबाजारी करने वाले के विरुद्ध कार्रवाई कर लाइसेंस निरस्त कर दिये हो, पर झाबुआ जिले में किसान हमेशा से ठगाता आया है और हमेशा ठगाता ही रहेगा, यह बात सार्वजनिक है। इस वर्ष झाबुआ व अलीराजपुर जिले में सामान्य बारिश से कम बारिश अब तक हुई है, परंतु किसान को अपनी फसल को अंकुरित करने हेतु उर्वरक खाद की जरूरत समय-समय पर पड़ती है, लेकिन पिछले करीब 15 दिनों से जिले में उर्वरक यूरिया खाद की इतनी किल्लत हो गई की किसानों को पैसे देते भी खाद नहीं मिल रहा है, वही स्टॉक लिस्ट 266 रुपए में मिलने वाला यूरिया खाद 450 रुपए तक बेच रहे हैं।

266 रुपए में कभी नहीं मिलता किसानों को यूरिया खाद

शासन के निर्देशानुसार किसानों को 266 रुपए में ही यूरिया खाद शासकीय संस्थाओं में हो या प्रायवेट डीलर हो कोई भी इसी मूल्य में खाद बेच सकता है, अगर इससे एक रुपया भी ऊपर लिया जाता है तो खाद विक्रेता के विरुद्ध सख्त कार्रवाई करने का प्रावधान है बावजूद सहकारी संस्थाओं में यह खाद 280 या उसके ऊपर किसानों को मिलता है। वही डीलर द्वारा जब खाद की किल्लत नहीं होती है उस समय कम से कम 300 से 320 रुपए में किसानों को खाद दिया जाता है और किल्लत के समय स्टाक लिस्ट व डीलर अधिक से अधिक भाव में खाद बेचकर खाद की कालाबाजारी करते हैं। किसान भी मजबूरी में अपनी फसल को बचाने के लिए मुंह मांगा पैसा देकर उर्वरक खाद ले जाता है।

वर्तमान की बात करें तो डीलरों ने 450 रुपए तक खाद को बेच दिया है, उक्त खाद की किल्लत खाद की रेक मेघनगर, रतलाम आदि में नहीं लगने के कारण आ रही है। इस संबंध में सहकारी संस्थाओं में बात की तो बताया, खाद की डिमांड किए हुए 10-15 दिन हो गए हैं पर खाद की रैक नहीं लगने के कारण खाद नहीं आया है। वर्तमान में शासन के निर्देशानुसार 80 प्रतिशत खाद सहकारी संस्थाओं के माध्यम से मिलेगा तो वही 20 प्रतिशत खाद डीलरों को दिया जाएगा। जिले में स्टॉक लिस्ट एवं डीलर के पास खाद आने पर रिटेलर को खाद नहीं दिया जाता है, डीलर ही महंगे भाव में खाद बेच अपने व्यारे-न्यारे कर रहे हैं। तो वही हमारे सूत्र अनुसार जिले में खाद की किल्लत होने से बदनावर,बड़नगर आदि स्थानों के स्टाकलिस्ट, बड़े डीलरों से 380 से 400 रुपए तक छुट-पुट विक्रेता खाद मंगवा कर उसे 450 रुपए तक बेच रहे हैं। सरकार द्वारा न खाद की पूर्ति की जा रही है और न हीं इस खाद की कालाबाजारी को स्टाकलिस्टो से बचाया जा रहा है, नतीजन किसान का शोषण होकर वह ठगाया ही जा रहा है।

डब्ल्यूएचओ ने कहा, कोरोना के खिलाफ लड़ाई में क्षमताओं को बढ़ाए जाने की जरूरत

नई दिल्ली। डब्ल्यूएचओ ने कहा है कि, भारत में कोरोना के खिलाफलड़ाई में क्षमताओं और प्रतिक्रियाओं को बढ़ाए जाने की जरूरत है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की दक्षिण पूर्वी एशिया की क्षेत्रीय निदेशक डॉ. पूनम खेत्रपाल सिंह ने कहा कि, हम भारत में राज्यों के स्तर पर क्षमताओं से परिचि?त है। भारत जैसे बड़ी आबादी वाले देश में जो उपाय किए गए हैं उनको सभी क्षेत्रों के लिए समान रूप से पर्याप्?त नहीं माना जा सकता है।

बीते दिनों डॉ. पूनम खेत्रपाल सिंह ने कहा था कि, कोरोना संक्रमण के चलते लोगों के मन में भारी उथल-पुथल हो रही है। लोगों में कोरोना संकट के चलते अवसाद और अलग-थलग रहने के भाव पैदा हो रहा है। लोग चिंता, अवसाद, गुस्सा, दुख, बेचौनी जैसी भावनाओं और समस्याओं से शिकार हो रहे हैं। घरेलू हिंसा के मामलों में भी कई गुना इजाफा हुआ है। उन्होंने कहा कि, इससे जीवन और जीवनयापन दोनों प्रभावित हुए हैं।

अमेरिकी निवेशकों से बोले पीएम मोदी

भारत में निवेश के शानदार अवसर

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इंडिया आइडियाज शिखर सम्मेलन के दौरान खुली अर्थव्यवस्था की पैरवी करते हुए कहा कि उन्होंने पिछले 6 साल के दौरान इसे खोलने, पारदर्शित लाने और इनोवेशन के साथ कई सुधार के कदम उठाए। उन्होंने कहा कि कोविड-19 के दौरान भारत ने 20 अरब डॉलर का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश आकर्षित किया है। अमेरिका अपना सहयोगी बताते हुए कहा प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत-अमेरिका स्वभाविक सहयोगी है और हम आगे भी रिश्तों को नई ऊंचाई पर ले जाएंगे।

उन्होंने भारत के बेहतर भविष्य की वकालत करते हुए %आत्मनिर्भर भारत% के लिए अमेरिका का सहयोग मांगा। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि हम सुधारों के प्रबल समर्थक हैं। खुले वातावरण में खुला बाजार बनाता है। भारत अवसरों का देश बना रहा है। उन्होंने कहा कि अमेरिकी कंपनियों के लिए नागरिक उड्डयन समेत कई क्षेत्र में भारत में निवेश की असीम संभावनाएं हैं।अमेरिकी निवेशकों को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि वे भारत के मेडिकल, रक्षा, इंफ्रास्ट्रक्चर में निवेश कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि विमानन, बीमा, रक्षा क्षेत्र में निवेश के काफी अवसर हैं, हमने रक्षा, बीमा क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश सीमा को बढ़ाया है। प्रधानमंत्री ने आगे कहा कि दुनिया को बेहतर भविष्य की जरूरत, वृद्धि के एजेंडे में गरीबों का ध्यान रखना होगा। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि इस साल अब तक 40 अरब डॉलर का अमेरिकी निवेश भारत में हो चुका है। पीएम मोदी ने कहा कि भारत और अमेरिका के कारोबारी रिश्ते मजबूत हो। उन्होंने कहा कि इज ऑफ लिविंग बहुत जरूरी है। इज ऑफ डूइंग की तरह ही इज ऑफ लिविंग भी जरूरी है। उन्होंने कहा कि कोरोना महामारी ने दुनिया को सीखने का मौका दिया है।

थांदला ने ली राहत की सांस, कोरोना योद्धा का किया सम्मान

माही की गूंज थांदला

वार्ड 3 के होली चोक ब्राह्ममण मोहल्ले के यश वैरागी व थांदला स्वास्थ्य विभाग का वार्ड बाय टिकम नायक खच्चरटोडी (मेघनगर) व अमित जैन थांदला ने कौराना को हराकर बुधवार को घर लोटने पर परिवार एवं मित्रजनो ने कोरोना योद्धाओ का फुलमाला पहनाकर व आरती उतारकर सम्मान किया गया, इन तीनो की 13 जुलाई को रिपोर्ट पोजीटिव आई थी 10 दिनो में कोराना को हराकर अपने घर आए, जिसके बाद परिवार की खुशिया भी देखते ही बन रही थी।

कांग्रेस अपनी ओर से कोर्ट में अन्य पिछड़ा वर्गों का पक्ष रखने खड़ा करेगी वरिष्ठ वकील

कांग्रेस सरकार ने ओबीसी आरक्षण को बढ़ाने का जारी किया था आदेश

पिछड़े वर्ग को दिया गया 27 फीसदी आरक्षण को लागू करवाए सरकार

भोपाल

मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी के कार्यकारी अध्यक्ष जीतू पटवारी, पर्यू मंत्री कमलेश्वर पटेल, पूर्व मंत्री सचिन यादव, विधायक दिलीप सिंह गुर्जर, सिद्धार्थ कुशवाहा, राहुल लोधी एवं प्रवक्ता वभा पटेल ने एक संयुक्त प्रेसवार्ता में मध्यप्रदेश सरकार पर 27 प्रतिशत आरक्षण को, जिसे कमलनाथ सरकार ने दिया था, तत्काल लागू करवाने की मांग की। कांग्रेस ने यह भी घोषणा की है कि अन्य पिछड़ा वर्ग के अधिकार पर बहस करने के लिए अदालत में वह पार्टी की ओर से वरिष्ठ वकीलों को खड़ा करेगी।

मध्यप्रदेश में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग की जनसंख्या प्रदेश की कुल जनसंख्या का लगभग 86 प्रतिशत है एवं अकेले अन्य पिछड़ा वर्ग की जनसंख्या लगभग 54 प्रतिशत है। मध्यप्रदेश में कांग्रेस की सरकार बनने के बाद सरकार ने अजा/ जजा एवं अन्य पिछड़ा वर्ग की तरक्की और उन्हें समाज की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए अनेक कार्य किये हैं। इसी क्रम मे कांग्रेस सरकार ने मध्यप्रदेश लोकसेवा अन्य पिछड़ा वर्गों के लिए आरक्षण अधिनियम मे वर्ष 2019 में संसोधन कर पिछड़ा वर्ग के लिए शासकीय सेवाओं में आरक्षण का प्रतिशत 14 से बढ़ाकर 27 प्रतिशत किया था। साथ ही साक्षात्कार एवं पदोन्नति समितियों में भी अन्य पिछड़ा वर्ग के प्रतिनिधि को रखना आवश्यक किया था।

न्यायालय में विचाराधीन हैं याचिकाएं

मप्र लोक सेवा संसोधन अधिनियम 2019 में प्रदत्त आरक्षण के विरुद्ध उच्च न्यायालय में विभिन्न याचिकाएं दायर की गई जो कि विचाराधीन हैं एवं निकट भविष्य में इनकी सुनवाई होना संभावित है। इन याचिकाओं में मुख्यत: आरक्षण के कुल प्रतिशत को आधार बनाया गया है। जबकि भारत के संविधान के किसी भी अनुच्छेद में आरक्षण की कोई अधिकतम सीमा निर्धारित नही है। अत: उच्च न्यायालय के समक्ष विचाराधीन इन याचिकाओं में शासन की ओर से समुचित एवं प्रभावी पक्ष रखा जाना अत्यंत आवश्यक है। ताकि पिछड़े वर्ग को इस बढ़े हुए आरक्षण का समुचित लाभ मिल सके। पिछड़े वर्गों को अधिकारिता देने के लिए आवश्यक है कि शासन अपना पक्ष सही तरीके से रखे। क्योंकि विगत वर्षों में भारतीय जनता पार्टी के 3-3 मुख्यमंत्री पिछड़े वर्गों से होने के बावजूद 15 वर्ष तक 27 प्रतिशत आरक्षण नहीं दिया गया था।

विद्वेष की बलि नहीं चढ़े आरक्षण

वर्तमान में भी जबसे भाजपा शासन में आई है तबसे उन्होंने कांग्रेस के द्वारा किये गए जनहित के अनेक निर्णय विद्वेषपूर्ण तरीके से बदलना प्रारम्भ कर दिए हैं कई प्रकरणों में शासन का पक्ष भी ठीक ढंग से नहीं रखा गया है। इसी तरह अन्य पिछड़ा वर्ग का यह 27 प्रतिशत आरक्षण विधेयक विद्वेष की बलि नही चढ़ना चाहिए। 27 प्रतिशत आरक्षण विधेयक पर कांग्रेस अपनी ओर से अन्य पिछड़ा वर्गों का पक्ष रखने हेतु एक वरिष्ठ अधिवक्ता का प्रबंध करेगी। किन्तु वर्तमान सरकार का यह दायित्व है कि अन्य पिछड़ा वर्गों की अधिकारिता पर विद्वेष का ग्रहण न लगने दे। कुछ निर्णय सामाजिक अधिकारिता प्रदान करने हेतु आवश्यक होते हैं और इन्हे राजनैतिक विद्वेष की बलि नही चढ़ना चाहिए।

पायलट को मनाने का कोशिश | दिग्गी ने कहा

सचिन पायलट मेरे बेटे जैसे, मैंने उन्हें मैसेज भेजा है कि सिंधिया जैसी गलती नहीं करें

भोपाल। मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने सचिन पायलट को सलाह दी है कि कांग्रेस में उनका भविष्य उज्ज्वल है और वे ज्योतिरादित्य सिंधिया के रास्ते पर नहीं जाएं। सिंह के मुताबिक, उन्होंने पायलट के पास संदेश भेजा है कि भाजपा अविश्वसनीय पार्टी है। सिंधिया जैसी गलती नहीं करना। भाजपा में जो भी दूसरी पार्टी से गया है वह कभी भी सफल नहीं रहा। सिंह ने कहा कि यह संदेश उन्होंने सचिन को भेजा था लेकिन, वह पहला मौका है, जब उनका जवाब नहीं आया। इससे पहले सचिन हर बात का फौरन जवाब देते थे।

भाजपा की वजह से राजस्थान में संकट

दिग्विजय ने कहा- राजस्थान में जारी सियासी संकट के पीछे भारतीय जनता पार्टी का हाथ है। मैंने सचिन पायलट को फोन लगाने का प्रयास किया। लेकिन, मेरे कॉल और मैसेज का वह जवाब नहीं दे रहे हैं। फिर भी मैंने उन्हें संदेश भेजा है कि सिंधिया जैसी गलती न करें। सचिन मेरे बेटे की तरह हैं। वह मेरा सम्मान करते हैं और मैं भी उन्हें पसंद करता हूं। मैंने बार-बार फोन किया। मैसेज भी किए। लेकिन उन्होंने जवाब नहीं दिया।

किसानों को लेकर मंत्री पटेल ने कहा

धोखाधड़ी और खाद की कालाबाजारी करने वालों पर लगेगी रासुका

भोपाल

मध्य प्रदेश में अब खाद की कालाबाजारी करने वाले व्यापारियों पर रासुका लगाई जाएगी। ऐसे कालाबाजारियों पर राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के तहत कार्रवाई की जाएगी। प्रदेश के कृषि मंत्री कमल पटेल ने ये ऐलान किया है। खाद और बीज को लेकर मध्य प्रदेश में किसानों के साथ धोखाधड़ी करने वालों के खिलाफ शिवराज सरकार सख्त हो गई है।

कृषि मंत्री कमल पटेल ने कहा कि किसानों के साथ धोखाधड़ी करने वाले 40 मामलों में अब तक कार्रवाई की जा चुकी है। अब यह हिदायत जारी की जा रही है कि अगर खाद को लेकर किसानों से किसी तरीके की धोखाधड़ी पाई जाती है, तो फिर आरोपियों के खिलाफ रासुका के तहत कार्रवाई की जाएगी। इससे एक दिन पहले ही मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने भी खाद की कालाबाजारी को लेकर सख्त निर्देश जारी किए थे।

अब तक क्या हुई कार्रवाई ?

सरकार ने खाद के भंडारण, परिवहन और बिक्री पर सख्ती से निगरानी करने के निर्देश दिए हैं। सभी जिलों में खाद-यूरिया वितरण व्यवस्था की मॉनिटरिंग के लिए कलेक्टर्स और अधिकारियों को आकस्मिक निरीक्षण के निर्देश भी दिए गए हैं।

कहां कितनी कार्रवाई हुई ?

छिंदवाड़ा जिले में 154 विक्रय केन्द्रों पर निरीक्षण के दौरान अवैध भंडारण करने पर तीन एफआईआर दर्ज की गई। बिना बिल के खाद बेचने पर एक लायसेंस निरस्त कर 3 प्रकरणों में लाइसेंस निलंबन की कार्रवाई की गई। सिवनी जिले में 105 विक्रय केन्द्रों का निरीक्षण और 1 प्रकरण में निलंबन किया गया। बड़वानी जिले में 26 विक्रय केन्द्रों के निरीक्षण में यूरिया का अवैध भण्डारण करने पर एक प्रकरण में एफआईआर और 3 प्रकरणों में लायसेंस निलंबन किया गया। छतरपुर जिले में 22 विक्रय केन्द्रों के निरीक्षण में उर्वरक का अवैध भण्डारण करने के एक प्रकरण में एफआईआर दर्ज की गई। नरसिंहपुर जिले के 122 विक्रय केन्द्रों के निरीक्षण में यूरिया के अवैध परिवहन एवं भण्डारण पर एक एफआईआर और 2 प्रकरणों में निलंबन किया गया।

गौवंश की सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाए

भोपाल। पशुपालन एवं सामाजिक न्याय मंत्री प्रेम सिंह पटेल ने कहा है कि गौ-शालाओं के निर्माण के साथ-साथ गौवंश की सुरक्षा पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाना चाहिए। इसके लिये स्थानीय स्तर पर पंचायत और नगर पालिका को जिम्मेदारी दिये जाने के लिये कार्यवाही सुनिश्चित की जाए। श्री पटेल मंत्रालय में पशुपालन विभाग की समीक्षा कर रहे थे। मंत्री पटेल ने कहा कि पशुपालन विभाग के अंतर्गत गौ-शालाओं और अन्य विभागीय योजनाओं को जिला पंचायतों की होने वाली बैठकों के स्थाई ऐजेन्डा में रखा जायें जिससे इन योजनाओं के क्रियान्वयन के साथ-साथ स्थानीय स्तर पर सतत मॉनिटरिंग भी की जा सके। मंत्री श्री पटेल ने कुक्कट व्यवसाय को बढ़ावा देने के निर्देश भी दिये।

नरसिंहपुर जिले में मिले प्राचीन शैलचित्र

भोपाल। मध्यप्रदेश में कई स्थानों पर हजारों साल पुराने शैलचित्र मौजूद हैं। हाल ही में नरसिंहपुर जिले के करेली वन परिक्षेत्र के दुर्गम विनैकी ग्राम के पास शक्कर नदी की गुफाओं में प्राचीन शैलचित्र मिले हैं। विनैकी में बमुश्किल 20-25 मकान हैं। खड़ी चढ़ाई वाली पहाड़ी पर स्थित विनैकी गांव में बाहरी व्यक्ति विरले ही पहुँच पाते हैं। करेली वन परिक्षेत्र की टीम ने प्राकृतिक रूप से अतिरमणीय स्थान पर स्थित इन शैलचित्रों का मुआयना किया। शैलचित्रों की वास्तविक आयु पुरातत्व विभाग के विश्लेषण के बाद ही निर्धारित की जा सकेगी।

उपचुनाव राजनीतिक दलों के बीच छिड़ी दलित सियासत

भाजपा- कांग्रेस को टक्कर देने मैदान में उतरेगी बसपा

भोपाल

मध्य प्रदेश में 26 सीटों पर होने वाले उपचुनाव को लेकर बीजेपी और कांग्रेस भले ही पूरी ताकत झोंकने का काम कर रही हो, लेकिन अब बहुजन समाज पार्टी ने भी चुनावी तैयारियां तेज कर दी है। बीएसपी ने ग्वालियर चंबल इलाके पर फोकस करते हुए दलित वोटों को साधने की कवायद को तेज कर दिया है। बीएसपी के प्रदेश अध्यक्ष रमाकांत पीपल ने ग्वालियर चंबल इलाके में दलितों पर अत्याचार को बड़ा मुद्दा होने की बात कही है।

बीएसपी के मुताबिक, गुना में दलित किसान परिवार के साथ हुई बर्बरता पूर्ण कार्रवाई और एक दलित युवक की मारपीट का मामला बीजेपी की मानसिकता को उजागर करता है। बीएसपी के प्रदेश अध्यक्ष के मुताबिक, बीजेपी और कांग्रेस दोनों ही दलित विरोधी पार्टी हैं। ऐसे में दलितों के विकास के लिए बीएसपी इस बार सभी 26 विधानसभा सीटों पर उपचुनाव में अपने उम्मीदवार खड़ा करेगी। बीएसपी का कहना है बीजेपी और कांग्रेस की दलित विरोधी मानसिकता ही उप चुनाव में बीएसपी का बड़ा मुद्दा होगा।

कांग्रेस हमेशा से दलितों के साथ खड़ी रही है

वहीं, गुना मामले में लगातार बीजेपी पर हमलावर कांग्रेस पार्टी ने कहा है कि कांग्रेस हमेशा से दलितों के साथ खड़ी रही है। गुना मामले में भी कांग्रेस ने प्रदेश सरकार की नीति- रीति का जमकर विरोध किया है। ऐसे में सभी 26 सीटों के उपचुनाव में कांग्रेस के साथ दलित और सभी वर्गों का वोट समर्थन हासिल होगा। कांग्रेस विधायक राहुल लोधी ने कहा है कि बुंदेलखंड से लेकर मालवा और ग्वालियर चंबल इलाके की सीटों पर हर वर्ग का समर्थन कांग्रेस को मिलेगा।

उपचुनाव बीजेपी के लिए अहम है

उपचुनाव के लिए बीएसपी के चुनाव मैदान में उतरने को लेकर कैबिनेट मिनिस्टर विश्वास सारंग ने कहा है कि उपचुनाव बीजेपी के लिए अहम है। सामने कौन सी पार्टी होगी या कौन सा उम्मीदवार होगा यह पार्टी के लिए कोई मायने नहीं रखता है। पार्टी पूरी दमदारी के साथ उपचुनाव में उतरेगी। दरअसल, 2018 के चुनाव में बीजेपी और कांग्रेस दोनों के लिए ही बीएसपी सिरदर्द साबित हुई थी।

भाजपा ने बूथों पर शुरू की चक्रव्यूह रचना

प्रदेश में विस की 26 सीटों पर होने वाले उपचुनाव में कांग्रेस को मात देने के लिए भाजपा ने बूथों पर चक्रव्यूह रचना शुरू कर दिया है। जातीय संतुलन के हिसाब से भाजपा बूथों का प्रबंधन कर रही है। भाजपा इस उपचुनाव के लिए करीब पांच हजार प्रतिबद्ध कार्यकर्ताओं की टीम तैयार कर रही है, जिन्हें मंडल स्तरीय और वर्चुअल बैठकों के जरिये उपचुनाव के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है। इनके सामने अधिक से अधिक मतदाताओं से भाजपा के पक्ष में मतदान कराने का लक्ष्य है। दरअसल, इन प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं की भूमिका बूथों से शुरू होगी। ग्वालियर जिले की डबरा विधानसभा क्षेत्र में इमरती देवी तीन बार चुनाव जीत चुकी हैं और 2018 में कांग्रेस के टिकट पर उन्होंने भाजपा के कप्तान सिंह को करीब 57 हजार वोटों से चुनाव हराया था। इमरती देवी कमल नाथ सरकार में मंत्री थीं और शिवराज सरकार में भी उन्हें मंत्री बनाया गया है। हाल ही में एक कार्यकर्ता से बातचीत में इमरती देवी ने आंख फोड़ने की धमकी दी तो ऑडियो वायरल हुआ और उनकी खूब आलोचना हुई।

मध्यप्रदेश विधानसभा के विधायक विश्राम गृह परिसर स्थित झुग्गियों के विस्थापन के संदर्भ में सोमवार को उच्च स्तरीय समीक्षा बैठक विधानसभा अध्यक्ष रामेश्वर शर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

कमलनाथ ने अतिक्रमण हटवाया तो शिव राज में वापस अतिक्रमण कैसे हुआ?

भोपाल। कांग्रेस मीडिया उपाध्यक्ष भूपेन्द्र गुप्ता ने कहा है कि मध्य प्रदेश की भाजपा सरकार दलित उत्पीड़न की राष्ट्र को दहला देने वाली गुना की घटना से पल्ला झाड़ने के लिए कांग्रेस पर अब झूठे आरोप लगा रही है। गुप्ता ने प्रकाशित प्रमाण जारी करते हुए बताया है कि गब्बू पारदी की जमीन का अतिक्रमण तो कमलनाथ सरकार ही हटा चुकी थी। उस जैसे आदतन अपराधी को भारतीय जनता पार्टी का संरक्षण लगातार मिलता रहा है। उन्होंने बताया कि 25 दिसंबर 2019 को कमलनाथ सरकार के भू माफिया हटाओ मुहिम के अंतर्गत गब्बू पारदी के इसी प्लाट का अतिक्रमण हटाया गया गया था। अब नरोत्तम मिश्रा जी को यह जवाब देना चाहिए कि जिस प्लाट को दिसंबर 2019 में ही अतिक्रमण मुक्त किया गया था उस पर फिर से पक्का कब्जा 4 महीने के अंदर कैसे हो गया? कौन लोग हैं जिन के संरक्षण में आपकी सरकार में दोबारा फेंसिंग हो गई और खेती भी शुरू हो गई, कैसे? गब्बू पारदी को बचाने के लिए प्रशासन ने अहिरवार परिवार पर बर्बर कार्यवाही की है जिसमें वह परिवार मरते मरते बचा है।

भाजपा की प्रदेश कार्यकारिणी पर टिकी नेताओं की नजरें

वीडी शर्मा की टीम में शामिल होने नेता लगा रहे हैं जोर

भोपाल

शिवराज मंत्रिमंडल के विस्तार व विभागों के बंटवारे के बाद अब भाजपा की प्रदेश कार्यकारिणी पर लोगों की नजरें टिकी हुई हैं। उम्मीद की जा रही है कि इसी सप्ताह घोषणा हो जाएगी। उपचुनाव को ध्यान में रखते हुए ग्वालियर-अंचल को महत्व मिलने की उम्मीद की जा रही है। भाजपा के कई नेता प्रदेश कार्यकारिणी में जगह पाने के लिए पूरा जोर लगा रहे हैं। वीडी शर्मा के सामने सबसे बड़ी चुनौती ज्योतिरादित्य सिंधिया के साथ आए उनके समर्थकों को एडजस्ट करना है। टीम वीडी शर्मा में सिंधिया समर्थकों को स्थान देकर यह बात प्रमाणित करने के लिए संगठन पर नैतिक दबाव अवश्य है कि सिंधिया व उनके समर्थकों को भाजपा ने आत्मसात कर लिया है। सांसद विवेक शेजवलकर से जुड़े एक-दो लोग भी प्रदेश कार्यकारिणी में जगह पा सकते हैं।

जगह पाने दावेदारों की लगी लंबी कतार

प्रदेश कार्यकारिणी में स्थान पाने के लिए दावेदारों की लंबी कतार है, लेकिन जिले के 5 से 6 नेताओं को स्थान मिलने की उम्मीद है। फिलहाल संगठन में जिन नामों की चर्चा चल रही हैं उनमें राजेश सोलंकी, वेदप्रकाश शर्मा, जयप्रकाश राजौरिया प्रमुख हैं। इसके साथ ही प्रदेश मीडिया प्रभारी लोकेंद्र पाराशर का प्रमोशन कर कोई अतिरिक्त दायित्व भी मिल सकता है। प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा भी अंचल के होने के कारण स्थानीय नेताओं को प्रदेश कार्यकारिणी में अधिक स्थान दे सकते हैं।

पूर्व मंत्री वर्मा ने भाजपा पर लगाया आरोप

मुख्यमंत्री शिवराज ने केंद्रीय मंत्री के भाई के निधन पर जताया शोक

ग्वालियर

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान सोमवार की सुबह मुरार बारादरी के समीप गली नंबर 3 आर्यनगर स्थित केन्द्रीय मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर के आवास पर पहुंचे। जहां उन्होंने शोक संवेदना व्यक्त की और शोक संतृप्त परिवार को ढांढस बंधाया। उन्होंने केन्द्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर के अनुज स्व. अजय प्रताप सिंह तोमर (मुन्नू भैया) के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि प्रदान की। इस दौरान सांसद एवं प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीडी शर्मा, नगरीय विकास मंत्री भूपेन्द्र सिंह, संगठन महामंत्री सुहास भगत एवं भाजपा के प्रदेश मीडिया प्रभारी लोकेंद्र पाराशर भोपाल से मुख्यमंत्री के साथ श्रद्धांजलि अर्पित करने आए थे।

चचेरे भाई ने इंदौर में तोड़ा दम

केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर के चचेरे भाई गब्बर तोमर को अज्ञात वाहन ने टक्कर मारकर बुरी तरह से घायल कर दिया। अस्पताल में इलाज के दौरान देर रात को उन्होंने दम तोड़ दिया। वे राता मंडल के गेट के सामने टहल रहे थे। तभी यह हादसा हो गया। बताया गया है कि टक्कर इतनी जोरदार थी कि गब्बर बेसुध हो गए।

भोपाल, इंदौर, उज्जैन सहित अन्य जेलों में प्रतिदिन हजारों राखियों का निर्माण जारी

कैदियों द्वारा बनाई गई राखी पहनेंगे देश के फौजी

प्रदेशभर की सेंट्रल और जिला जेलों में सजा काट रहे कैदी इन दिनों जेल के अंदर प्रतिदिन हजारों राखियों का निर्माण करने में जुटे हुए हैं। कैदियों द्वारा तैयार की गई राखी देश की सीमाओं पर तैनात फौजियों को भेंट की जाएगी और फौजियों की कलाई पर यह राखियां बंधेंगी। कुछ जेलों में स्टॉल लगाकर इनकी बिक्री भी की जाएगी।

कुछ जेलों में स्टॉल लगाकर बिक्री भी की जाएगी

भोपाल

कोरोना वायरस के संक्रमण के चलते अधिकांश जेलों में कैदियों की रोज होने वाली सोशल एक्टिविटी बंद है और उनसे सोशल डिस्टेंसिंग का पालन कराते हुए छोटा-मोटा काम कराया जा रहा है। इसकी शुरुआत इंदौर की सेंट्रल जेल से की गई थी, जहां कैदियों के माध्यम से बंद पड़ी स्टील के बर्तनों के निर्माण की यूनिट को चालू किया गया था। कैदियों द्वारा यहां स्टील की थाली, गिलास, कटोरी, चम्मच आदि का निर्माण किया जा रहा है। वहीं 3 अगस्त को कोरोना वायरस के संक्रमण के बीच ही भाई-बहन के पवित्र रिश्ते का पर्व रक्षाबंधन मनाया जाएगा। जेल में कैदियों द्वारा दिन-रात मेहनत कर राखियां बनाने का काम किया जा रहा है। जेल के अधिकारियों के अनुसार सबसे ज्यादा राखियों का निर्माण उज्जैन की भैरवगढ़ जेल में हो रहा है। यहां प्रतिदिन हजारों राखियां कैदियों द्वारा तैयार की जा रही हैं। इसके अलावा भोपाल, इंदौर, ग्वालियर और जबलपुर की जेलों में भी कैदियों के माध्यम से राखियों का निर्माण किया जा रहा है। जेल के अधिकारियों द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार कैदियों द्वारा तैयार की गई राखियां डाक के माध्यम से देश की सीमा पर तैनात फौजी भाइयों को भेजी जाएंगी और फौजी भाई इन राखियों को रक्षाबंधन के पर्व पर पहनेंगे। इसके अलावा इंदौर, उज्जैन सहित अन्य जेलों के बाहर स्टॉल लगाकर नाममात्र के शुल्क पर इन्हें आम लोगों को बेचा भी जाएगा।

लाखों मास्क भी तैयार किए

कोरोना वायरस से बचाव में उपयोगी मास्क का निर्माण भी जेलों में जारी है। मार्च में जैसे ही कोरोना वायरस का संक्रमण शुरू हुआ था, उसी दौरान कैदियों ने मास्क तैयार करने का काम जेल के अंदर ही शुरू कर दिया था। जेल प्रशासन ने इन्हें उच्च क्वालिटी का कपड़ा उपलब्ध कराया था। कैदियों द्वारा तैयार किए गए मास्क को सबसे पहले जेल के स्टाफ ने पहना, फिर इन्हें कैदियों को ही दिया गया। बाद में नगर निगम, स्वास्थ्य विभाग, शिक्षा विभाग, आईडीए को भेंट किया गया। नाममात्र के शुल्क पर इनकी बिक्री भी की गई, जिससे जेल प्रशासन को लाखों रुपयों की आय भी हुई।

सती सावित्री मनासिया मेडम का जादू.....

अधूरे दस्तावेजों के साथ अपात्र की कर डाली नियुक्ति पात्र महिला नियुक्ति के लिए अब भी खा रही है धक्के

माही की गूंज, पेटलावद, राकेश गेहलोत

महिला बाल विकास पेटलावद में फर्जीवाड़े का एक और मामला सामने आया है, जिसके बाद महिला बाल विकास पेटलावद में चल रहे आंगनवाड़ी भर्ती में बड़े घोटाले होने की जानकारी मिल रही है, जिसकी बड़े स्तर पर जाँच हो तो कई घोटालेबाज अधिकारियों के चहरे बै नकाब हो जाएंगे। 0 पिछले मामले में सेमलकुण्डिया में हुई फर्जी नियुक्ति का पूरा खुलासा सिल सिलेवार गूंज ने किया था कि, कैसे फर्जी तरीके से आवेंदन के साथ दस्तावेजो को ताक में रख बाद में कुरचित दस्तावेजो के दम पर पात्र महिला की जगह अपात्र की नियुक्ति कर दी गई है। मामला अब न्यायालय में पहुँच गया हैं जहाँ फर्जी नियुक्ति से जुड़े सभी अधिकारियों को न्यायालय में पेश होना पड़ेगा। 0गूंज की पहल के बाद महिला बाल विकास पेटलावद की परियोजना अधिकारी मनासिया मेडम की करतूतो से परेशान महिला ने अपने दस्तावेजो के साथ जानकारी दी जिसके हिसाब से जिसको अभी नियुक्त होकर नोकरी पर होना था, आज नियुक्ति के लिए सरकारी कार्यालयों के चक्कर लगा रही है। जबकि अधूरे ओर बिना दस्तावेज के साथ अपात्र महिला को परियोजना अधिकारी द्वारा जारी सूची में पात्र घोषित कर दी गई। द्वितीय स्थान पर रही आवेदिका ने यदि आपत्ति दर्ज नही कराई होती तो अब तक अपात्र महिला की नौकरी लग चुकी होती, जिस प्रकार से महिला बाल विकास विभाग में एक के बाद एक मामले सामने आ रहे हैं उससे बड़े घोटाले के साथ आंगनवाड़ी सहायिका और कार्यकर्ता की भर्ती में भारी अनियमिता भ्रष्टाचार किया गया हैं।

बावड़ी ग्राम पंचायत के मातापाडा फलिये फिर हुई फर्जी नियुक्ति

वर्ष 2018 में विकास खण्ड की ग्राम पंचायत बावडी के मातापाड़ा फलिया की आँगनवाड़ी सहायिका की मृत्यु के बाद खाली हुई आंगनबाड़ी सहायिका के पद के लिए भर्ती की निविदा निकाली गई, जिसमें 10 आवेंदन महिला बाल विकास को प्राप्त हुए, जिसकी तुलनात्मक सूची का अंतिम प्रकाशन महिला बाल विकास पेटलावद द्वारा किया गया, जिस पर अनुविभागीय अधिकारी पेटलावद,

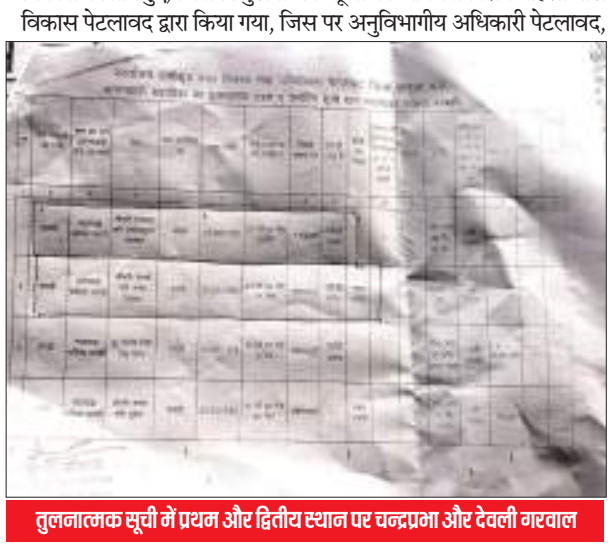

तुलनात्मक सूची में प्रथम और द्वितीय स्थान पर चन्द्रप्रभा और देवली गरवाल

महिला परियोजना अधिकारी सहित जांच समिति ने सूची जारी कर दी। जांच समिति के अनुसार बावडी निवासी श्रीमती चंद्रप्रभा को इस पद के लिए योग्य मानते हुए सूची में प्रथम स्थान यानी नियुक्ति हेतु पात्र घोषित किया गया। मामले में दूसरे स्थान पर रही देवली गरवाल ने चंद्रप्रभा की नियुक्ति पर आपत्ति दर्ज करा दी, जिससे अब तक चंद्रप्रभा की आधिकारिक नियुक्ति नही हो सकी हैं। मामला आज भी जाँच के नाम पर अटका हुआ हैं, आपत्तिकर्ता तो तारीख पर हाजिर होती हैं, लेकिन दूसरा पक्ष अब तक जांच समिति के समक्ष पेश नही हुई।

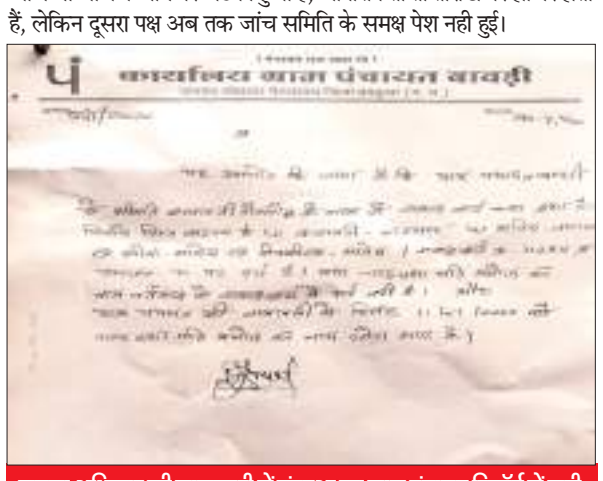

सूचना अधिकार की जानकारी में चंदप्रभा का नाम पंचायत रिकॉर्ड में नही, मतदाता सूची में 11 जुलाई 2020 में जोड़ने की जानकारी

बिना जरूरी दस्तावेज के ही कर दी नियुक्ति

भर्ती प्रक्रिया के दौरान आवेंदनकर्ता चंद्रप्रभा ने जो दस्तावेज पेश किए वो इतने भी पर्याप्त नही थे की तुलनात्मक सूची में प्रथम स्थान दिया जाए, लेकिन जोड़-जुगाड़ की व्यवस्था में सब सम्भव है, सूचना अधिकार में प्राप्त दस्तावेजो के अनुसार नोकरी के लिए पात्र घोषित की गई चंद्रप्रभा ने अपना बावडी निवासी होने के लिए कोई मजबूत प्रमाण मूल निवासी, राशनकार्ड, परिवार आईडी, आधार कार्ड जैसा कोई दस्तावेज पेश नही किया गया, विभाग ने केवल आवेदक द्वारा आवेदन के साथ दिया उसके पति का मतदाता परिचय पत्र जो कि, बावडी पंचायत का बना हुआ है, उसे मान्य कर लिया और आवेदन की जांच के दौरान इस पर विचार तक नही किया गया कि, महिला बावडी की निवासी हैं भी की नही। पिछले मामले में अपने आप को पाक-साफबताने वाली सती सावित्री महिला बाल विकास पेटलावद की परियोजना अधिकारी मनासिया मेडम अपने आप को इस मामले में भी पाक-साफबता रही हैं, परियोजना अधिकारी का कहना है कि, आवेंदिका ने पति का पहचान पत्र दिया था जो नियमानुसार मान्य हैं ।

पात्र बताई गई महिला नही है बावडी निवासी

सूचना अधिकार में ग्राम पंचायत बावडी से निकली जानकारी में चोकाने वाला मामला सामने आया है, जिस महिला को बावडी निवासी मानकर तुलनात्मक सूची में प्रथम स्थान दिया गया उसका ग्राम पंचायत बावडी में कोई रेकॉर्ड नही है, ग्राम पंचायत बावडी ने जानकारी देते हुए बताया कि, चंद्रप्रभा पति मनोज का नाम वर्तमान में राशनकार्ड मे दर्ज नही है, लेकिन ग्राम पंचायत की नामावली में दिनांक 11 जुलाई 2020 को जोड़ा गया हैं। जबकि चंदप्रभा द्वारा 22 सितम्बर.2018 को किए आवेंदन में गलत जानकारी देते हुए अपने आपको बावडी निवासी बताया। मामले में जो दस्तावेज गूंज के हाथ लगे हैं उससे साफहै कि, सेमलकुण्डिया की तरह बावडी में भी आँगनवाड़ी में नियुक्त हेतु भारी लेन-देन ओर सेटिंग की गई है, क्या जिम्मेदार अधिकारी सब कुछ रेकार्ड पर होने के बाद भी कोई कार्यवाही करेगे या फिर अधिकारी लेन-देन कर फर्जी नियुक्ति करने वालो को बचा कर पद पर की फर्जी भर्ती को ही मान्य करेगे?

बाल कल्याण समिति ने किया बालिका का पुनर्वास, मध्यप्रदेश की नाबालिंग को मिला माता-पिता का सानिध्य

सी.डब्ल्यु.सी. के निर्देश पर दानपुर थाने मे दर्ज हुआ पोक्सो एक्ट में मामला

माही की गूंज झाबुआ

दक्षिणी राजस्थान के सुदूर बाबादेव के जंगल में आहत मिली झाबुआ जिले की 13 वर्षीय नाबालिग बालिका ने सोमवार को उस समय राहत की सास ली जब उसे पुलिस सुरक्षा में बांसवाड़ा बाल कल्याण समिति द्वारा परिवार मे पुनर्वास हेतू झाबुआ के लिए रवाना किया गया और झाबुआ जिला बाल कल्याण समिति ने तत्काल प्रभाव से अपने समक्ष प्रस्तुत की गई नाबालिग बालिका की आपबीती सुनी और उसका परिवार मे पुनर्वास के आदेश जारी कर उसे उसके माता-पिता की देखरेख और संरक्षण मे विधिवत सुपूर्द कर दिया गया।

उल्लेखनीय है कि, बासवाड़ा जिले के बाबादेव जंगल से नाबालिग बालिका को दानपुर पुलिस ने लावारिस अवस्था मे प्राप्त होना बताते हुए विगत 13 जुलाई को जिला बाल कल्याण समिति बांसवाड़ा के समक्ष प्रस्तुत किया गया था। समिति ने संदिग्न अवस्था मे बालिका के प्राप्त होने को गंभीरता से लिया तथा इस मामले का प्रसंज्ञान लेते हुए थाना अधिकारी दानपुर को प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज कर अनुसंधान के निर्देश दिये थे। जिस पर

अगले दिन 14 जुलाई को पुलिस द्वारा पोक्सो एक्ट के तहत आपराधीक मामला पंजिबद्ध कर जांच शुरू की है। इस बीच समिति ने नाबालिग बालिका को क्वारेन्टाइन सेन्टर में रखे जाने और उसके अभिव्यक्ति कथन कलमबद्ध किये जाने के बाद उसे अस्थाई रूप से माँ उमा निराश्रीत बालिका गृह बांसवाड़ा की देखरेख और संरक्षण मे रखे जाने के आदेश दिये थे। तीन सदस्यीय न्यायपीठ मे हरीश त्रिवेदी, शान्तिलाल चौबीसा तथा मधुसूदन व्यास ने बालिका के सर्वोत्तम हितों को ध्यान मे रखते हुए अतिशीघ्र उसके परिवार मे पुनर्वास कराए जाने का निर्णय लेते हुए कोविड-19 के चलते पुलिस सुरक्षा मे एक निजी वाहन द्वारा नाबालिग बालिका को क्षेत्राधिकार वाली झाबुआ बाल कल्याण समिति के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए भिजवाया गया। इस दौरान बांसवाड़ा समिति ने झाबुआ समिति के सदस्य यशवंत भण्डारी के मोबाईल पर जब संर्पक किया तो उनके बताये अनुसार बालिका को लेकर झाबुआ पहुचने वाले सुरक्षा दल ने रास्ते में आने वाले मेघनगर थानाधिकारी से सम्पर्क किया और उस थाना क्षेत्र के बेड़ावली निवासी बालिका के माता-पिता को साथ मे लेकर झाबुआ जिला बाल कल्याण समिति के समक्ष बालिका को प्रस्तुत किया। जहां विधिवत कार्यवाही करते हुए झाबुआ समिति ने बालिका को उसके माता-पिता की सुपूर्दगी मे दे दिया गया।

अनदेखी: झोलाछाप बंगाली के घर अब भी आ रहे चोरी की दवाइयों के बख्से

फर्जी उर्फबंगाली डॉक्टर अधिकारियों के रहमो करम पर अभी भी चला रहे अपने क्लिनिक

माही की गूंज, बनी त्रिशभ गुप्ता

कोविड-19 महामारी बीमारी पर नियंत्रण करने के लिए सरकार द्वारा मध्यप्रदेश में रविवार को लॉकडाउन घोषित किया गया है, मगर गांव में अवैध झोलाछाप बंगाली मिलन विश्वास रविवार को भी शासन के आदेश की धज्जियां उड़ाते हुए मरीजों की जान के साथ खिलवाड़ करने में लगा हुआ है। क्या प्रशासन ने इन्हें छूट दे रखी है? या फिर गांधी छाप नोटों के लालच में कोई कार्यवाही नहीं करते है? कई वर्षों से जमे झोलाछाप मिलन विश्वास का रुतबा है यह है कि, उनके घर मेडिकल वाले कार से दवाइयों के बख्से चोरी-चारी उतारने घर आते हैं। कुछ दिन पहले ही एमपी 43 सीए 7438 नंबर की कार में दो व्यक्ति चोरी की दवाइया लेकर आए और मिलन विश्वास

के क्लीनिक पर पहुंचे और दवाइयों से भरे बख्से उतारे और चल दिए। जिससे स्पष्ट जाहिर होता है कि, झोलाछाप बंगाली को प्रशासन से कोई डर नहीं है, ओर तो ओर यह झोलाछाप डॉक्टर अपने आप को डॉक्टर केडी मंडलोई से भी बड़ा समझता है और कहता है कि, मैं डॉक्टर मंडलोई से भी अच्छा इलाज करता हूं, इस तरह की बात मरीजों से करना एक झोलाछाप व फर्जी डॉक्टर के द्वारा स्पष्ट जाहिर करता है कि, इसे प्रशासन का सहयोग अवश्य मिल रहा है। गांव में पहले से ही दो बंगाली अपना कब्जा जमाए बैठे हैं और तीसरे ने भी आकर अपनी दुकान मेन चौराहे पर खोल ली है, इन झोलाछाप को शासन का कोई डर नहीं है यह खुलेआम मरीजों की जान से खिलवाड़ कर मोटी रकम कमाने में लगे हुए हैं।

सावधान: अब कोई नहीं सुरक्षित, पुलिस के पास खोजबीन करने तक का समय नहीं

तहसील कार्यालय से दिनदहाड़े लेपटॉप चोरी की दूसरी घटना

माही की गूंज, पेटलावद

पेटलावद नगर में चोरी की घटना आम हो गई है, लगातार बढ़ते चोरी के मामले के पुलिस व्यवस्था पर सवाल खड़े हो रहे हैं। रात में चड्डिधारी गैंग हो या वाहन चोरी की घटना या फिर दिन दहाड़े धोका देकर दुकानों से माल गायब करने का मामला, हर मामले में पुलिस के हाथ कोई बड़ी सफलता नही लगी है। ताजा मामला शुक्रवार का है जहां तहसील न्यायालय से एक लेपटॉप चोरी होने की घटना हो गई। प्राप्त जानकारी के अनुसार तहसील न्यायालय में वकील से मिलने पहुंचे पत्रकार ओम प्रकाश मालवीय अपना लेपटॉप साथ लेकर गए थे और कोई जानकारी लेपटॉप पर ले रहे थे इस दौरान पत्रकार ओपी मालवीय को फोन आने पर किसी काम से जाना पड़ा वही वकील साहब भी न्यायलय की तारीख निपटाने के लिए अपने बैग और समान के साथ लेपटॉप भी वही छोड़ कर चले गए, जब तक पत्रकार ओपी मालवीय ओर वकील साहब वापस आए तब तक वहां से लेपटॉप गायब हो चुका था काफी खोज बिन करने के बाद भी लेपटॉप नही मिला, अज्ञात चोर लेपटॉप के साथ उसका बेग भी ले गया जिसमे पत्रकार के जरूरी कागज भी रखे थे, मामले की शिकायत पुलिस थाने पर की गई है।

परिसर में लगे हैं सीसी टीवी कैमरे

जहा से लेपटॉप चुराया गया वो स्थान तहसीलदार ओर एसडीएम की डाइस से मात्र चार ओर दस कदम की दूरी पर है और दिन भर न्यायालय में लोगो का आना जाना लगा रहता है। न्यायालय परिसर की सुरक्षा की दृष्टि से परिसर में लगभग तीन से चार कैमरे भी लगे हुए हैं, जिसमे चोर जरूर कैद हुआ होगा जिसके लिए सीसीटीवी फुटेज चेक किये गए। मामले की जानकारी के बाद आम लोगो मे चर्चा है कि जब सीसीटीवी से लेंश न्यायालय क्षेत्र ही सुरक्षित नही रहे तो आम जनता का क्या ?

पहले भी हो चुका है लेपटॉप चोरी, दूसरी घटना होने पर आया मामला सामने

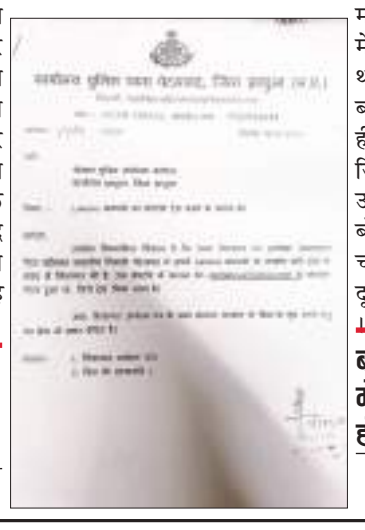

तहसील परिसर से लेपटॉप चोरी का ये पहला मामला नही है इससे पहले भी न्यायालय परिसर के पीछे वाले भाग से एक आफिस से लेपटॉप चोरी की घटना हो चुकी है जिसकी जानकारी भी दूसरी घटना होने पर मिली पहले मामले की जानकारी भी लिखित में 16.01.2020 पेटलावद थाने पर दी गई थी लेकिन बदनामी के डर से अधिकारियों ने ही मामले को दबा दिया था और जिसका लेपटॉप चोरी गया उसको नया लेपटॉप खरीदने का बोल दिया गया । जिसके बाद चोर के हौसले बुलंद हुवे ओर दूसरी घटना को अंजाम दिया गया ।

बड़े अधिकारियों के संज्ञान में आने के बाद भी नही होते मामले दर्ज

पुलिस के पास हर तरह की छोरी की लिखित सूचना पीड़ित द्वारा दी जाती है लेकिन अपराध दर्ज कर अपना रेकार्ड खराब नही हो इसलिए पुलिस किसी प्रकार से भी अपराध पंजीबद्ध नही करती। पिछले बार हुवे लेपटॉप चोरी की घटना में भी आवेंदन देने के बाद भी प्रकरण दर्ज नही हुवा , न ही पुलिस ने ये कोशिश की , की आखिर दिनदहाड़े कैमरों के बीच कैसे ओर कोन चोरी कर गया , वही पिछले दिनों हुई तीन मोटरसाइकिल चोरी की घटना ओर 24जून को बामनिया चौकी क्षेत्र में हुई लूट की घटना, पेटलावद में झांसा देकर मोटर चुराने की धटना सहित कई ऐसी वारदात है जो पुलिस रेकार्ड में दर्ज नही है और अपराध रेकार्ड में दर्ज नही होने से पुलिस इनका खुलासा नही करती हैं न ही चोरों को ट्रेस करने का प्रयास करती हैं , हालांकि मामला पत्रकार और तहसील न्यायालय से जुड़ा है इसलिए एफआईआर दर्ज होने की संभावना है लेकिन उन अपराधो का क्या जो आवेंदन के रूप में पुलिस रेकार्ड में धूल कहा रहे हैं ऐसे अपराध चोर अड़ सटे में पकड़ा भी जाता है तो अपराध दर्ज नही होने के कारण कई मामलों में बच जाता है और जप्त माल और जिससे माल जप्त होता हैं साथ ही कई मामलों में चोर को बचाने के नाम पर अवैध वसूली हो जाती है ।

आठ दिन में सात मौत- सहमा थांदला

संजोग: दो दोस्तों का एक साथ हुआ निधन

माही की गूंज, थांदला

थांदला नगर में लगातार मौत का सिलसिला थमने का नाम नही ले रहा है, एक के बाद एक थांदला में 07 लोग दुनिया छोड़ गए, सोमवार को दो दोस्त एक साथ दुनिया से विदा हो गए। ब्राह्मण समाज के अध्यक्ष सेवा भावी शिक्षक रमाकांत भट्ट व उनके सहयोगी साथी वासुदेव उपाध्याय का बिमारी के कारण निधन हो गया, दोनों अजीज मित्रों की अंत्येष्टि एक साथ पास-पास में रखकर की गई। दोनों मित्रों नै आठ दिन पहले मिलकर चर्चा करी थी की मरेंगे तो अपने दोनों एक साथ मरेंगे दोनों अंतिम संस्कार एक ही जगह पर नोगावा नदी के तट पर पास-पास ही किया गया, दोनों शिव भक्त थे और श्रावण का महिना सोमवती अमावस्या सोमवार वो भी श्रावण का दोनों मित्रों की अंत्येष्टि में नगर के सभी समाज जन व भक्त मंडल उपस्थित थे। मंगलवार को फिर गवली मोहल्ले के कुवेत रिटर्न काना भाई गवली भी लम्बी बिमारी से निधन हो गया, थांदला में लगातार मौत का सिलसिला चल रहा है अब तक पिछले 08 दिनों में 07 लोग काल का ग्रास बन चुके हैं, अब नगर में तरह-तरह की चर्चा हो रही है।

पेड़ गिरने से हो सकता बड़ा हादसा, वाहन चलकों को हो रही परेशानी

माही की गूंज, सारंगी

पीडब्ल्यूडी विभाग की बड़ी लापरवाही सामने आ रही हैं, थांदला-बदनावर मुख्य मार्ग से होकर सारंगी पहुँचने वाले मार्ग पर एक बबुल का पेड़ गिरने की स्थिति में है, मार्ग से दिन भर आवाजाही रहती हैं, उक्त रोड पर एक बड़ा बबूल का पेड़ है वह बीच रोड तक फैला हुआ है और खाफी झुक कर गिरने की स्थिति में है, लेकिन अधिकारी शायद किसी दुर्घटना होने का इंतजार कर रहे। वाहन चालकों का कहना है कि, बबूल का पेड़ बीच रोड पर होने से कई बार आने-जाने वाले वाहन दिखाई नही देते है जिससे बड़ा हादसा ना हो जाए इसलिए डर लगता है, खास कर बडे वाहन चालक को बड़ी परेशानियों का सामना करना पढ़ रहा है।

मेघनगर क्षेत्र के आजाद चौक पर डॉक्टर मिले कोरोना संक्रमित, आखिर कब टुटेगी कोरोना की यह चैन?

माही की गूंज मेघनगर भूपेंद्र जैन

वैश्विक महामारी कोरोना संकट झेल रहा पूरा विश्व इसी महामारी के सुरक्षित कहे जाने वाले मेघनगर मैं भी एक निजी चिकित्सक के कोरोना पॉजिटिव आने के साथ पैर पसार चुका है बताते है कि, मेघनगर में उक्त डाक्टर के क्लीनिक पर कई मरीज आसपास के इलाकों से अपना इलाज कराने यहां पर आते थे, अब सवाल यह उठता है कि, किन-किन मरिजों और व्यक्तियों ने यहां पर इलाज कराया, उनकी कितनी संख्या है यह तो जांच टेस्ट होने के बाद ही आकलन किया जा सकता है, मेघनगर क्षेत्र में आ चुके इस कोरोना संक्रमण की चेन को तोड़ना ही प्रशासन का लक्ष्य होना चाहिए। इस महामारी को लेकर अनलॉक के बाद झाबुआ के रहवासी डाक्टर जो कि, मेघनगर में अपना क्लीनिक चलाते हैं, डॉक्टर के संक्रमित होने की पुष्टि के बाद मेघनगर के आजाद चौक और स्टेशन की गली कंटेनमेंट झोन घोषित किया गया। जिला प्रशासन ने संक्रमित डॉक्टर के मोहल्ला भी कंटेनमेंट झोन के रूप में चिह्नित करते हुए मोहल्ले की गली को पूरी तरह से सील कर दिया। मोहल्ले में आने-जाने वालों पर रोक लगाने के लिए पुलिसकर्मियों को भी प्रतिनियुक्ति की गई।

मेघनगर का कन्टेनमेंट क्षेत्र

बीएमओ डॉ. सेलेक्सी वर्मा ने बताया कि, अभी तक 10 लोगों के सेम्पल लिए गए हैं और बाकी लोगों के सेंपल लेने की प्रक्रिया चालू है, आसपास के एरिया को सेनेटाइज कर सील किया गया और जितने भी आसपास के लोग है उन्हें होम कारंटाइन किया जा चुका है।

संपादकीय

अयोध्या में रामतीर्थ का भूमिपूजन

अयोध्या में मंदिर निर्माण की कवायद का तेज होना न केवल स्वाभाविक, बल्कि स्वागत-योग्य है। कोरोना की वजह से इस कार्य में कुछ देरी हो चुकी है, लेकिन राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट अब इसमें और देरी के पक्ष में नहीं है। शनिवार को हुई ट्रस्ट की बैठक में यह फैसला किया गया कि अगस्त में निर्माण कार्य में तेजी आ जाएगी। सब कुछ ठीक रहा, तो यह तीन मंजिला मंदिर साढ़े तीन साल में बनकर तैयार भी हो जाएगा। भूमि की उपलब्धता को देखते हुए मंदिर परिसर का आकार-विस्तार बढ़ाने का फैसला भी ठीक ही है। मंदिर के लिए 120 एकड़ तक जमीन उपलब्ध हो सकती है। पहले यह दायरा 67 एकड़ तक सीमित था। एक मांग यह भी रही है कि इस मंदिर को दुनिया का सबसे बड़ा मंदिर बनाया जाए, लेकिन इस होड़ में न पड़ते हुए मंदिर का आकार सामान्य ही रखा जा रहा है, तो यह स्वागत-योग्य है। किसी भी प्रकार की होड़ में न पड़ते हुए इसे सुंदर और सशक्त बनाने की दिशा में काम करना चाहिए। इस मंदिर की ऊंचाई 161 फुट होगी, वैसे भारत में ही अनेक मंदिर हैं, जो इससे ऊंचे हैं। देश का सबसे ऊंचा मंदिर मथुरा-वृंदावन में इस्कॉन के तहत निर्माणाधीन है, जिस पर 300 करोड़ रुपये से ज्यादा खर्च अनुमानित है। अयोध्या में निर्मित होने जा रहे राम मंदिर का बजट 100 करोड़ के आसपास होने का अनुमान है। यह अच्छी बात है कि ट्रस्ट आस्था व सुविधा पर अपना ध्यान केंद्रित करता दिख रहा है। मंदिर का शिलान्यास देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को करना है, तो कोई आश्चर्य नहीं। भारत जैसे धर्म सजग देश में राजनीति और सरकार की धर्मस्थल के मामलों में लिप्तता कतई नई नहीं है। ऐसा देश में पहले भी होता रहा है। मथुरा-वृंदावन में निर्माणाधीन बताए जा रहे दुनिया के सबसे ऊंचे मंदिर का शिलान्यास साल 2014 में उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री ने किया था। फिर भी, किसी धर्मस्थल के मामले में राजनीति और सरकार की भूमिका जितनी सीमित हो, उतना ही अच्छा। किसी भी धर्मस्थल का निर्माण लोगों के धन से होना चाहिए और धर्मक्षेत्रों में सरकार की भूमिका कानून-व्यवस्था सुनिश्चित करने तक सीमित रहनी चाहिए। मंदिर ट्रस्ट का यह फैसला भी यथोचित है कि मंदिर के लिए देश के 10 करोड़ लोगों से मदद ली जाएगी। यह भी सुनिश्चित करना होगा कि मंदिर किन्हीं दो-चार उद्योग घरानों, अखाड़ों या पार्टियों का होकर न रह जाए। सुप्रीम कोर्ट ने पिछले वर्ष अपना फैसला सुनाते हुए दूसरे धर्म को भी पूरा मान दिया था। भारतीय संविधान की सेकुलर भावना को आगे बढ़ाने की जरूरत है। दूसरे धर्मस्थल का शिलान्यास व निर्माण भी उतने ही भव्य तरीके से होना चाहिए और वहां भी किसी प्रकार की होड़ से बचते हुए सबकी भावनाओं का यथोचित आदर क्रम रहना चाहिए। ध्यान रहे, मंदिर उस भगवान का बन रहा है, जिनका पूरा चरित्र ही दूसरों और आम लोगों को आदर देने में बीत गया। अब कोई कारण नहीं कि मर्यादा पुरुषोत्तम का मंदिर निर्माण किसी भी मर्यादा का उल्लंघन करते हुए किया जाए। राम के युग से आज तक ईमानदारी एक सर्वोच्च मर्यादा रही है और वह निरंतर बनी रहनी चाहिए। भारत में धर्मस्थल दिखावा या पर्यटन स्थल नहीं, बल्कि मानवीयता, दरिद्र नारायण की सेवा व जन-कल्याण के संदेशों के वाहक बन जाएं, तो इससे बेहतर कुछ नहीं।

हिंदी कैसे बने राष्ट्रभाषा ?

डॉ. वेदप्रताप वैदिक, लेखक

भारत में उत्तरप्रदेश हिंदी का सबसे बड़ा गढ़ है लेकिन देखिए कि हिंदी की वहां कैसी दुर्दशा है। इस साल दसवीं और बारहवीं कक्षा के 23 लाख विद्यार्थियों में से लगभग 8 लाख विद्यार्थी हिंदी में अनुत्तीर्ण हो गए। डूब गए। जो पार लगे, उनमें से भी ज्यादातर किसी तरह बच निकले। प्रथम श्रेणी में पार हुए छात्रों की संख्या भी लाखों में नहीं है। यह वह प्रदेश है, जिसने हिंदी के सर्वश्रेष्ठ साहित्यकारों और देश के सर्वाधिक प्रधानमंत्रियों को जन्म दिया है।

हिंदी को महर्षि दयानंद 'आर्यभाषा' और महात्मा गांधी 'राष्ट्रभाषा' कहते थे। नेहरु ने उसे 'राजभाषा' का दर्जा दे दिया लेकिन 73 साल की आजादी के बाद हिंदी के तीनों नामों का हश्र क्या हुआ ? 'आर्यभाषा' तो बन गई 'अनार्य भाषा' याने अनाड़ियों की भाषा ! कम पढ़े-लिखे, गांवदी, पिछड़े, गरीब-गुरबों की भाषा। 'राष्ट्रभाषा' आप किसे कहेंगे ? यह ऐसी राष्ट्रभाषा है, जिसका प्रयोग न तो राष्ट्र के उच्च न्यायालयों में होता हैं और न ही विश्वविद्यालयों की ऊंची पढ़ाई में होता है। राष्ट्रभाषा के जरिए आप न तो कानून, न चिकित्सा, न विज्ञान पढ़ सकते हैं और न ही कोई अनुसंधान कर सकते हैं। आज से 55 साल पहले मैंने जब 'इंडियन स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज़' में अपना पीएच.डी. का शोधग्रंथ हिंदी में लिखने का आग्रह किया था तो संसद में जबर्दस्त हंगामा हो गया था। मुझे 'स्कूल' से निकाल बाहर किया गया। संसद और प्रधानमंत्री के हस्तक्षेप के बाद मुझे वापिस लिया गया लेकिन आज तक कितने पीएच.डी. भारतीय भाषाओं के माध्यम से हुए ? जहां तक 'राजभाषा' का सवाल है, आज भी देश में राज-काज के सारे महत्वपूर्ण काम अंग्रेजी में होते हैं। संसद और विधानसभाओं के कानून क्या हिंदी में बनते हैं ? सरकारी नौकरशाह क्या अपनी रपटें, टिप्पणियां, अभिमत, आदेश वगैरह अंग्रेजी में नहीं लिखते हैं ? सच्चाई तो यह है कि अंग्रेजी आज भी भारत की राजभाषा है। अंग्रेजी की इस भूतनी की आगे हमारे सारे प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री दब्बू साबित हुए हैं। ये स्वतंत्र भारत के गुलाम नेता हैं। इन बेचारों को पता ही नहीं कि कोई राष्ट्र संपन्न, शक्तिशाली और सुशिक्षित कैसे बनता है।

दुनिया का कोई भी राष्ट्र विदेशी भाषा के जरिए संपन्न और महाशक्ति नहीं बना है। जिस देश में किसी विदेशी भाषा का वर्चस्व होगा, उसके छात्र नकलची ही बने रहेंगे। उनकी मौलिकता लंगड़ाती रहेगी। जो देश तीन-चार सौ साल पहले तक विश्व-व्यापार में सर्वप्रथम था, जिस देश के नालंदा और तक्षशिला- जैसे विश्वविद्यालयों में सारी दुनिया के छात्र पढ़ने आते थे और जो देश अपने आप को विश्व-गुरु कहता था, आज उस देश के लाखों छात्रों का प्रतिभा-पलायन क्यों हो जाता है ? क्योंकि उनकी रेल को बचपन से ही अंग्रेजी की पटरी पर चला दिया जाता है। मैं विदेशी भाषाएं सीखने का विरोधी बिल्कुल नहीं हूं। मैंने स्वयं अंग्रेजी के अलावा रुसी, फारसी और जर्मन भाषाएं सीखी हैं लेकिन अपने प्रत्येक काम में मैंने अपनी मातृभाषा हिंदी को प्राथमिकता दी है। सभी प्रांतों में यदि शिक्षा का अनिवार्य माध्यम मातृभाषा हो तो हिंदी आर्यभाषा, राष्ट्रभाषा और राजभाषा अपने आप बन जाएगी।

कोरोना काल में भी मंत्री व अफसरान देश में लूट रहे...!

नईम कुरेशी, लेखक

पिछले 6-7 सालों में आम तौर पर देखा जा रहा है कि केन्द्र या सूबों की जनहितकारी योजनायें जमीनी स्तर पर ढंग से लागू नहीं हो सकी हैं। सिर्फ और सिर्फ भाषणबाजी व धार्मिक उन्माद फैलाया जा रहा है। कोरोना काल से दो बरस पहले तक चाहे रेलों के संचालन का मामला हो या शिक्षा की गुणवत्ता को बनाये रखने की बातें हों हमें शायद कहीं पूरे रिजल्ट नहीं दे पाये हैं। रिजर्व बैंक के गवर्नर तो अपने कार्यकाल से पहले ही त्याग पत्र देकर अपने विदेशी विश्वविद्यालय पर वापस पढ़ाने चले गये थे। न सरकार ने उन्हें रोका और न ही उनको खुलकर काम करने दिया गया। जी.एस.टी. से लेकर आयकर कानूनों को भी जमीन पर हम पूरी तौर से लागू ही नहीं कर पाये। नोटबंदी की सफलता या विफलता पर कोई स्पष्ट वाद-विवाद हमारी सरकारें नहीं करा पायीं। विपक्षी नेता की गम्भीरता भी कम ही दिखाई दीं। देश में विकास रुक सा गया लग रहा है। लगातार बेरोजगारी बढ़ती जा रही है। नौजवानों में हताशा स्पष्ट तौर पर देखी जा रही है।

लगातार देखा जा रहा है कि अधिकांश योजनायें धीरे-धीरे ऊपर से नीचे की तरफ आ रही हैं और जमीनी स्तर पर उन्हें लागू करने वाला पंचायत स्तर, ब्लॉक स्तर के जनप्रतिनिधि या उपमंत्री देश प्रेम से परे सिर्फ अपना घर भरने में लगा है। योजनाओं के लागू करने की रुकावटों पर कभी चर्चा नहीं की जा रही है। कोई योजना 5 वर्ष में लागू होनी है उसका आधा काम भी 6 साल में पूरा होता दिखाई नहीं देता। हर काम प्रधानमंत्री कार्यालय देखता आ रहा है।

रेलवे जो सबसे बड़ी परियोजना पर काम कर रहा है वहां की हालातें सबसे खराब हैं। यहां 42 तरह के कन्सेशन दिये जा रहे थे जिसमें 32 तक के फालतू माने जाते रहे हैं। इसी तरह किसी भी सूबे में केरल को छोड़ सभी परियोजनायें समय पर लागू न होकर उनके बजट से दो गुना तक पैसा खर्च कर बर्बाद हो रहा है। कोई ओवरब्रिज तीन साल में 20 करोड़ में बनता था वो 60 करोड़ में 4 साल में बन रहा है। कोई अफसर या सियासतदां इस पर गौर करता नहीं दिखाई देता। सवाल उठाने वाले मीडिया संस्थानों को सरकार ने प्रभावहीन बनाकर अपनी गोदों में बैठा लिया। गरीबों पर पुलिस अत्याचार बढ़ा दिये गये हैं। अब प्रेस में भी उनकी आवाजें दबा दी जा रही हैं। हमारे सियासतदां जमीनी हकीकत को समझने को तैयार ही नहीं दिखते। कोरोना काल में तो भुखमरी व बेरोजगारी इतनी बढ़ गई है कि भ्रष्टाचारियों व काला बाजारियों की चांदी हो गई है। उन्होंने मुनाफा खोरी और बढ़ा दी हैं। शासन, प्रशासन मूक दर्शक बना बैठा है। आज केन्द्र में देखें या सूबों में राजनीति सिर्फ सत्ता भोग में सिमट कर रह गई है। इतिहासों में ये बात दर्ज है कि जब जब आम जनता में सियासतदानों से विश्वास उठा है तब तब कुर्सी पर तानाशाहों का कब्जा आसान होता जा रहा है। गोआ, कर्नाटक, मध्य प्रदेश आदि में ये स्पष्ट देखा जाता रहा है। देश की पहली जरूरत है रचनात्मक काम सहयोग, आपसी भाईचारा। अभी भी सियासतदां सिर्फ सत्ता के लिये जातिवाद, शाहीनबाग, हिन्दू-मुस्लिम मुद्दे की दम पर सत्ता पाना चाह रहे हैं। कहीं-कहीं वो सफल भी हो रहे हैं। म.प्र. में नौकरशाही सियासतदां की कमजोरी का लगातार फायदा उठाते देखे जा रहे हैं। लगभग 80 फीसद आय.ए.एस. व आय.पी.एस. अफसरान आम लोगों को भेड़-बकरियों व जानवरों जैसा बर्ताव करते देखे जा रहे हैं। प्रदेश में गोडसे को महान बताने वाले लोग जो आतंकवादी मामलों में गम्भीर केस न्यायालयों में मुल्जिम के तौर पर नामजद हैं उन्हें सांसद बनवाया जा रहा है। नौजवान नौकरशाह इस सब मामलों को देखकर खुद सामंतों जैसा बर्ताव करते देखे जा रहे हैं। आमतौर पर जैसे विधायकगण मंडी में खरीदे-बेचे जा रहे हैं। वैसे ही कलेक्टरी व बड़े नगर निगमों के आयुक्तों व पुलिस अधीक्षकों के पदों को भी खरीदा-बेचा जा रहा है। फिर भी सियासतदां की तुलना में नौकरशाह कुछ संवेदनशील देखे जा रहे हैं। भारत में पिछले दो दशकों से नुमाइन्दे गैर जिम्मेवार व गैर संवेदनशीलता की रेखायें पार करते देखे जा रहे हैं। हमने 1971 से प्रकाशचन्द्र सेठी, अर्जुन सिंह, कैलाश जोशी जैसे संवेदनशील नुमाइन्दे मध्य प्रदेश में देखे 1990 तक व जी.एन. बुच, एम.एन.बुच, सुधीरनाथ, अजयनाथ, शिवराज सिंह जैसे अफसरान भी देखे जो हर सीढ़ी दर सीढ़ी आम लोगों के खास रहा करते थे। ना थानों में तहसीलों में लूट होती थीं न मिलावटखोरी, मुनाफाखोरी का दौर था पर आज हर तरफ लूट का दौर है यहां तक लाखों करोड़ों के स्वामी राजा महाराजा तक जमीनों की चोरी करते देखे सुने जा रहे हैं। हायकोर्ट तक उन्हें फटकार कर जुर्माने कर रहे हैं। नौकरशाह ट्रांसफर होने व सेवा से रिटायर होने पर भी बड़े-बड़े बंगले घेरे बैठे हैं। यही आचरण जनप्रतिनिधियों का भी सरेआम देखा जा रहा है।

आत्मनिर्भरता और सियासी इम्युनिटी

आजकल कल पड़ोसियों के तेवर और नखरे कुछ अधिक घातक साबित हो गए हैं। कागज पर धरती और सीमाओं को तो पलट ही रहें हैं भगवान को भी नहीं बख्स रहें हैं। कहते हैं कि आप पड़ोसी के यहाँ नहीं हमारे यहाँ पैदा हुए हैं। अब बेचारे भगवान को भी पड़ोसियों की मुई डिप्लोमैसी नहीं छोड़ रहीं है। लॉकडाउन में उनकी भी मुसीबत बढ़ गई है। अब बेचारे भगवान, पड़ोसी ससुराल वालों को सम्भाले कि घर के भक्तों को, वह खुद समझ नहीं पा रहें हैं।

प्रभुनाथ शुक्ल, लेखक

अनाड़ी कभी खिलाड़ी नहीं हो सकता है, लेकिन यह शायद हमारा मिथक है। क्योंकि यह प्रगतिवादी युग है। यहाँ विधाएं गढ़ी जाती हैं। बस एक लकीर बनाने की ज़रूरत है। सच कहूँ , बदली स्थितियों में हम यह समझ ही नहीं पाए हैं कि खिलाड़ी, अनाड़ी में है या अनाड़ी, खिलाड़ी में समाया हुआ है। भ्रम की स्थित हैं या फ़िर यह मेरा स्थापित भ्रम है। ठीक उसी तरह की नारी बीच सारी है कि सारी बीच नारी है। हमने जो देखा है वह सच है कि खिलाड़ी कभी- कभी अनाड़ी वन जाता है और अनाड़ी कभी खिलाड़ी बन जाता है। बस जिसका दाँव बैठ गया वहीं सिकंदर। वैसे खिलाड़ी खेल के माहिर होते हैं, उन्हें क्रिकेट की पिच से लेकर सियासी पिच का पूरा अनुभव होता है। कब, किस दाँव का प्रयोग करना है, उसी को लेकर उनका अनुलोम- विलोम चलता रहता है। लेकिन कभी- कभी अनाड़ी का दाँव बड़े- बड़े खिलाड़ियों को चित्त कर जाता है।

अनाड़ी और खिलाड़ी के बीच यह दाँव- पेच धरती से लेकर देवलोक तक में खेला जा रहा है। देवता हों या असुर, इंसान हो या जानवर वह सत्ता और सिंहासन के बेहद करीब रहना चाहते हैं। एक शेर जंगल में दूसरे शेर को घास नहीं डालता। देवलोकवासी इन्द्र को तो हमेशा अपने सिंहासन की पड़ी रहती है। जब भी दानव या दैत्य अथवा धरतीलोक का प्राणी उनके सिंहासन पर नज़र

डालता है तो वह हार्स ट्रेडिंग कर अपनी कुर्सी बचा लेते हैं। अब तक अनगिनत राजा- महाराजा अश्वमेध यज्ञ कर देवराज का सिंहासन छीनने की साजिश रच चुके हैं। हालांकि इन्द्र की सत्ता सिंगल मेजोरिटी कि है, अगर गठबंधन कि होती तो जाने कब की गिर गई होती। उन्हें भी फ्लोर टेस्ट पर आना होता। लेकिन देवलोक में उनकी अच्छी पकड़ है। कहते हैं कि वक्त बदल गया है, लेकिन खरबूजे को देख खरबूजा रंग बदलता है। आजकल कल पड़ोसियों के तेवर और नखरे कुछ अधिक घातक साबित हो गए हैं। कागज पर धरती और सीमाओं को तो पलट ही रहें हैं भगवान को भी नहीं बख्स रहें हैं। कहते हैं कि आप पड़ोसी के यहाँ नहीं हमारे यहाँ पैदा हुए हैं। अब बेचारे भगवान को भी पड़ोसियों की मुई डिप्लोमैसी नहीं छोड़ रहीं है। लॉकडाउन में उनकी भी मुसीबत बढ़ गई है। अब बेचारे भगवान, पड़ोसी ससुराल वालों को सम्भाले कि घर के भक्तों को, वह खुद समझ नहीं पा रहें हैं। वैसे भी आजकल घर बचाना मुश्किल हो गया है। क्योंकि बारिश का मौसम है। जब बाढ़ आती है तो जलजला लेकर आती है। वह सब कुछ डुबोने को ही आती है। अपन की राजनीति में भी बाढ़ का जलजला आया है। जिस पायलट के भरोसे नेताजी बाढ़ग्रस्त इलाके का सर्वेक्षण कर जनता के दिल और दिमाग में उतर जाते हैं। अब वहीं पायलट उन्हें डूबोता नज़र आता है। अपन की राजनीति गिरगिट को भी मात दे रहीं हैं। वह चौबीस घंटे में जाने कितने रंग बदलती है। फ़िलहाल असली रंग देखने के लिए सरकारों का दिव्यांग होना ज़रूरी है। दिव्यांग सरकारों में निर्दल की पौबारह होती है। वह रोज नए- नए दलदल बनाते हैं। रिज़ॉर्ट और होटलों में लज़ीज भोज उड़ाते हैं। हार्स ट्रेडिंग के ट्रेडमार्क बनते हैं। जबकि बेचारी जनता जो उन्हें चुनकर भेजा है वह चुनावों के पांच साल बाद भी मरियल घोड़ा साबित होती है। दिव्यांग सरकारों के लिए हमेशा से हार्स ट्रेडर की ज़रूरत रहीं है, यह अघोषित किंतु सत्य है। अपुन के यहाँ आपदा में भी अवसर तलाशने की आदत है। सियासत कि उपजाऊ ज़मीन से एक जुमला खूब चला है आत्मनिर्भरता का । इस मंत्र का इस्तेमाल कर कोरोना काल में राजनीति का इम्युनिटी पावर बढ़या जाता है। जिसकी वजह से उसे च्यवनप्रकाश और गिलोय बटी की ज़रूरत नहीं पड़ती। क्योंकि दिव्यांग सरकारों में हमारे माननीयों का इम्युनिटी पावर अपने आप दुरुस्त रहता है। अगर उन्हें लगा कि इम्युनिटी पावर कम हो रहीं है तो तुरंत आत्मनिर्भरता को विकल्प अंगीकार कर लिया जाता है। क्योंकि हमारे राजनेता अब आत्मनिर्भरता पर अधिक बल दे रहें हैं। इस खेल में आंकड़ेबाजी कि बाजीगरी वहीं करेगा जो आत्मनिर्भर हो और उसका इम्युनिटी पावर दुरुस्त हो। जैसा कि आपको पता भी होगा कि कितने लोग दल और दिल बदल कर आत्मनिर्भर बन गए हैं और रिज़ॉर्ट में छक कर भोज उड़ा रहें हैं। कोई डाल- डाल है तो कोई पात- पात। रेगिस्तान की बंजर भूमि में भी आपदा में अवसर खोजने में लोग जुटे हैं। हमारे भेजे में ही नहीं धँस रहा है कि यहाँ कौन अनाड़ी है और कौन खिलाड़ी। लेकिन इस आपदा में जो प्रबंधन कर ले वहीं सिकंदर है।

राम के खिलाफ बागी हुए ओली !

डॉ. श्रीगोपाल नारसन एडवोकेट, लेखक

विनाश काले विपरीत बुद्धि यह कहावत नेपाल के प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली पर फिट बैठती है।अपनी कुर्सी पर मंडराते खतरे के बीच उन्होंने भगवान राम को ही विवादों के कटघरे में खड़ा कर दिया।राम के खिलाफ उनकी बगावत अब उन्हें भारी पड़ रही है।स्वयं नेपाल के विदेश मंत्रालय ने ओली के बयान पर सफाई देते हुए कहा कि प्रधानमंत्री का इरादा किसी की भावना को आहत करने का नही था।लेकिन भावनाये तो आहत हुई, इससे कोई इंकार नही कर सकता ।तभी तो प्रधानमंत्री ओली राम व अयोध्या अपने बयान पर अपनो का ही निशाना बन गए है और उनकी कुर्सी फिर से डगमगाने लगी है।

नेपाल के प्रधानमंत्री के पी शर्मा ओली ने दावा किया था, वास्तविक अयोध्या नेपाल में है, भारत में नहीं। उनका कहना है कि भगवान राम का जन्म दक्षिणी नेपाल के थोरी में हुआ था। ओली के इस बयान की चहुँ ओर निंदा हो रही है। भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता विजय सोनकर शास्त्री ने कहा कि भगवान राम हमारी आस्था के प्रतीक हैं और किसी को भी राम व अयोध्या से खिलवाड़ करने की अनुमति नहीं दी जा सकती, भले ही वह नेपाल के प्रधानमंत्री ही क्यों न हों। काठमांडू में नेपाली कवि भानुभक्त की जयंती पर ओली ने कहा कि नेपाल सांस्कृतिक अतिक्रमण का शिकार हुआ है और इसके इतिहास से छेड़छाड़ की गई है। भानुभक्त का जन्म पश्चिमी नेपाल के तानहु में सन1814 में हुआ था और उन्होंने वाल्मीकि रामायण का नेपाली में अनुवाद किया था। उनका देहांत सन1868 में हुआ था। ओली ने कहा, वास्तविक अयोध्या बीरगंज के पश्चिम में थोरी में स्थित है, भारत अपने यहां भगवान राम का जन्मस्थल होने का दावा गलत करता है। ओली ने सवाल उठाया कि इतनी दूरी पर रहने वाले दूल्हे और दुल्हन का विवाह उस समय संभव नहीं था। जब परिवहन के साधन भी नहीं थे। प्रधानमंत्री ओली के अनुसार , ङ्बीरगंज के पास जिस स्थान का नाम थोरी है वह वास्तविक अयोध्या है, यही भगवान राम का जन्म हुआ था। भारत में अयोध्या पर बड़ा विवाद है। लेकिन हमारी अयोध्या पर कोई विवाद नहीं है।ङ्ग उन्होंने कहा, ङ्बवाल्मीकि आश्रम भी नेपाल में है और जहां राजा दशरथ ने पुत्र के लिए यज्ञ किया था, वह रिडी में है जो नेपाल में है।ङ्ग ओली ने दावा किया कि चूंकि दशरथ नेपाल के राजा थे यह स्वाभाविक है कि उनके पुत्र का जन्म नेपाल में हुआ था इसलिए अयोध्या नेपाल में है। यानि भगवान राम भारतीय नहीं नेपाली थे, यह दावा करने वाले नेपाल के प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली भारतीयों के साथ साथ अब अपनी ही पार्टी के नेताओं के निशाने पर भी आ गए हैं। हर कोई केपी ओली के इस बेतुके बयान की आलोचना कर रहा है। नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी के भी कई नेताओं ने प्रधानमंत्री के इस बयान निंदा की है और ओली को बयान वापस लेने और बिना तथ्यों के कोई बात नहीं कहने की नसीहत दी है। नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी के उपाध्यक्ष बामदेव गौतम ने कहा कि पीएम ओली के बयान से अंतरराष्ट्रीय विवाद पैदा हो गया है। उन्होंने प्रधानमंत्री ओली को सलाह दी थी कि वह इस संबंध में अध्ययन किए गए किसी भी संदर्भ सामग्री का बिना शोध के, बिना तथ्यात्मक साक्ष्य के उल्लेख न करें।क्योंकि

राम के भक्त नेपाल और भारत में बड़ी संख्या में हैं और हम कम्युनिस्ट इतिहास के साथ अन्याय नहीं कर सकते। उन्होंने ओली को चेताया था कि स्वार्थ के लिए धर्म का प्रयोग ना करे।उनके शब्दो मे, दुनिया में कई धर्म हैं, कई धार्मिक संप्रदाय और उनके अनुयायी हैं। किसी को भी उनके धार्मिक विश्वास को नहीं ठेस पहुंचनी चाहिए। गौतम ने कहा कि उन्हें लगता है कि प्रधानमंत्री ओली को अपनी टिप्पणी वापस लेकर आत्म-आलोचना करनी चाहिए। नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी के प्रवक्ता और राष्ट्रीय सभा सांसद नारायण काजी श्रेष्ठ ने भी तत्काल हितों के लिए बिना तथ्यों को देखे कुछ भी कहने और प्रचार करने की प्रवृत्ति छोड़ने का प्रधानमंत्री को सुझाव दिया। नेपाल कम्युनिस्ट नेता भीम रावल ने कहा कि प्रधानमंत्री ने सीमा विवाद का मुद्दा बदलते हुए राम और अयोध्या का मुद्दा छेड़ दिया है। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के अध्यक्ष महंत नृत्य गोपाल दास महाराज के शब्दों में, भारत और नेपाल के संबंधों को नेपाल केप्रधानमंत्री ओली खत्म करते जा रहे हैं। चीन जैसे कपटी देश का दोस्त बनकर भारत के भाई वाले रिश्ते ठोकर मार रहे हैं। ओली का बयान उनकी कुंठित और भ्रमित मानसिकता को दिखाता है। भारत मे जन्मे श्री राम भारत ही नहीं, पूरे विश्व में पूजे जाते हैं।नृत्यगोपालदास ने कहा कि नेपाल भी भारतीय परंपराओं पर चलने वाला देश रहा है। इस धरोहर को कोई भी चीनी भक्त प्रधानमंत्री मिटा नहीं सकता ।

अयोध्या राम जन्मभूमि के मुख्य पुजारी आचार्य सतेंद्र ने कहा कि नेपाल का भारत और अयोध्या से त्रेता युग से संबंध रहा है। शास्त्रों में अयोध्या प्रमाणित है, नेपाल के प्रधानमंत्री को ज्ञान ही नहीं है। अयोध्या राम दल ट्रस्ट ने तो नेपाली पीएम ओली के लिए बुद्धि-शुद्धि यज्ञ तक किया है। अयोध्या राम दल ट्रस्ट अध्यक्ष पंडित कल्किराम का दावा है कि नेपाल के पीएम ओली खुद नेपाली नहीं है, भारत और नेपाल का युगों पुराना सांस्कृतिक नाता है। नेपाल की 60 फीसदी जनता आज भी भारत पर निर्भर है। वह प्रभु राम को अपना दामाद मान कर पूजा करती है। भगवान राम पूरी दुनिया के हैं। वही अयोध्या शोध संस्थान के निदेशक डॉ. वाईपी सिंह कहते हैं कि भारत के उत्तर प्रदेश की अयोध्या ही श्रीराम की वास्तविक जन्मस्थली है। राम और अयोध्या की बात वाल्मीकि रामायण और बाकी धर्म ग्रंथों में भी मौजूद है।ऐसे में नेपाल के प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली द्वारा बिना तथ्यों के अयोध्या व राम को नेपाल का बताना उनके मानसिक दिवालियापन का प्रमाण है।

उपमान की खोज में राहुल

राहुल गाँधी ने (17 जुलाई 2020) नरेंद्र मोदी को भारत का चेम्बरलेन बताया। बड़ी यादगार टिप्पणी की। ब्रिटेन के नेविल चेम्बरलेन (1937-40) प्रधान मंत्री थे जिन्हें एडोल्फ हिटलर ने धोखा दिया था। युद्ध विराम संधि के बाद चेकोस्लोवाकिया तथा पोलैंड पर कब्ज़ा कर लिया। नतीजन प्रवंचित चेम्बरलेन को पदत्याग करना पड़ा था। बुलडॉग शक्ल के विंस्टन चर्चिल प्रधान मंत्री बने। उन्होंने द्वितीय विश्वयुद्ध जीता।

के. विक्रम राव , लेखक

अर्थात चीन (नाजी जर्मनी की भांति) मोदी की नियति बन सकता है। राहुल के अनुमान में। उनके गुजराती सांसद अहमद पटेल याद भी दिला चुके हैं कि मोदी अबतक नौ बार चीन जा चुके हैं, चार बार मुख्यमंत्री के रूप में। मगर पाया कम, खोया ज्यादा। मोदी 17 सितम्बर 2014 (अपने 64वें जन्मदिन पर) को शी जिनपिंग का अपने ग्राम वडनगर में स्वागत भी कर चुके हैं। शी के गाँव का ही ह्वेन सांग मोदी के गाँव की यात्रा सदियों पूर्व कर चुका था। यही नजदीकियां अगर दूरियां बनती गयीं तो ?

नयी बनी आत्मीयता के बावजूद, गत माह चीन की जनमुक्ति सेना ने पूर्वी लद्दाख में बीस भारतीय सैनिकों को मार डाला तथा 64 वर्ग किलोमीटर भूभाग हथिया लिया। इसीलिए भाजपा सरकार के इस अपराध पर ही कांग्रेस के युवा अगुवा (50 वर्षीय) राहुल गाँधी ने मोदी को चेम्बरलेन कहा, जो ब्रिटेन का घृणित और निन्दित प्रधान मंत्री रहा था। यूं तो राहुल को अपने जन्म (19 जून 1970) से तीस वर्ष पूर्व वाले द्वितीय विश्व युद्ध के हादसे की याद ताजा है। मगर अपने पैदाइश के सिर्फ 8 वर्ष बाद की बात वे सुगमता से भूल गए। राज्यसभा में (20 अक्टूबर 1962, संध्या 4 बजे) भारतीय जनसंघ के छत्तीस-वर्षीय अटल बिहारी वाजपेयी ने उनकी दादी के पिता को चेम्बरलेन नाम से विभूषित किया था । बहत्तर-वर्षीय जवाहरलाल नेहरु तबतक पूर्वोत्तर भारत में चीन के साथ युद्ध में पैंतालीस हजार वर्ग किलोमीटर भूभाग हार चुके थे। चौदह सौ सैनिक मरे थे, हजार घायल हुए, चार हजार को चीन ने बंदी बना लिया था। भारत की इतनी दयनीय अधोदशा स्वतंत्रता के पश्चात् पहली दफा हुई थी। अतः तुलनात्मक आंकलन में मोदी ङ्कनन्हें चेम्बरलेनङ्क ही होंगे। नेहरु तो कई गुना विशाल।

चूँकि कॉलेज शिक्षा से राहुल गाँधी वंचित रहे हैं, अतः ब्रिटिश प्रधान मंत्रियों के विषय में ज्यादा पठन उनका नहीं हो पाया होगा। तो नेविल चेम्बरलेन की चन्द भली बातों से भी अवगत हो जाएँ । हम श्रमजीवियों की दृष्टि से इस युद्ध-विफल प्रधानमंत्री ने दो अत्यंत मानवीय कानून बनवाए थे। फैक्ट्री एक्ट 1937 को संसद में पारित कर सप्ताह में सातवें दिन अनिवार्य अवकाश का दिन घोषित किया। सवेतन वार्षिक छुट्टी का भी प्रावधान किया। भारत में पूंजीपतियों के दबाव में मोदी सरकार ने पिछले महीनों में इन श्रम कानूनों को नष्ट कर दिया, क्लीव बना डाला।

उपमान के तौर पर मोदी के मुकाबले दो अन्य ब्रिटिश प्रधान मंत्रियों का उल्लेख भी हो जाय। खुदा ना खास्ता, गाहे बगाहे, कहीं, किंचित, कभी अगर राहुल गाँधी भारत के प्रधान मंत्री बन बैठे, तो उन्हें सर राबर्ट

वालपोल (1721-42) तथा एलेक डगलस ह्यूम (1963-64) का अनुकरणीय नमूना जांचना होगा।

वालपोल की शासन नीति कांग्रेसी प्रधान मंत्री पीवी नरसिम्हा राव जैसी थी। निष्क्रियता में ही क्रियाशीलता होती है। अर्थात निर्णय न लेना भी एक मायने में निर्णय लेने जैसा ही होता है। वालपोल के सूत्र थे कि कुत्ता अगर सो रहा हो तो उठाइए मत, वरना भौंक कर सबको जगा देगा। इसी प्रकार चीन सोता हाथी है, उसे सोने दो। आज भारत इसे भली भांति महसूस कर रहा है। नरसिम्हा राव के मौन का ही परिणाम है कि आज राम को ठौर मिल रहा है।

अगला उदाहरण है डगलस ह्यूम का। उनकी पत्नी एलिजाबेथ कहती थीं कि ङ्कभूकंप अथवा युद्ध भी मेरे पति को डुला नहीं सकते हैं। मगर ट्रैफिक जाम में वे गुस्सैल हो जाते हैं।ङ्क ह्यूम जब विदेश मंत्री थे तो भारत आये थे। तब नेहरु सरकार के विदेश मंत्री सरदार स्वर्ण सिंह से मिले थे। कलकत्ते भी आये थे। उस वक्त बम्बई से मुझे पश्चिम बंगाल विधान सभा की रिपोर्टिंग के लिए टाइम्स ऑफ़ इंडिया ने प्रशिक्षण पर भेजा था। डगलस ह्यूम की प्रेस वार्ता हुई थी । मैंने ध्यान से सुना। चीन के आक्रमण पर ह्यूम स्पष्ट रूप से बोले थे। भारत के पक्ष में ही। तात्पर्य यही कि प्रधान मंत्री बनने पर राहुल गाँधी हेतु डगलस ह्यूम के धीरज और सहनशीलता के गुण मददगार होंगे।

अब नरेंद्र मोदी पर रोज राहुल गाँधी के अर्थहीन हमलों से जाहिर है कि वे अपना कद बढ़ाने का यत्न कर रहे हैं।

दिग्गज भाजपायी नेता लोग भंग लोकसभा में विपक्ष की नेता सुषमा स्वराज को प्रधान मंत्री बनाना चाहते थे। पर मोदी ने बढ़त ले ली।

इसी सन्दर्भ में राहुल को एक और वाकये से अवगत होना चाहिए।

सोवियत संघ के याल्टा सैरगाह में द्वितीय विश्वयुद्ध के अंत में एक सुबह नाश्ते पर अमरीकी राष्ट्रपति फ्रेंकलिन रूजवेल्ट, ब्रिटिश प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल और रूसी तानाशाह जोसेफ स्टालिन बैठे थे। रूजवेल्ट ने बताया कि गत रात उन्होंने सपना देखा कि विश्व सरकार निर्मित हुई है और वे उसके राष्ट्रपति बने हैं। चर्चिल ने कहा कि उन्होंने भी ठीक ऐसा ही सपना देखा। बस फर्क यह था कि वे इस विश्व सरकार के प्रधानमंत्री बने हैं। दोनों पर मुस्कराते हुए स्टालिन ने अपनी पाइप से राख झाड़ते हुए पूछा, और तुम दोनों को राष्ट्रपति तथा प्रधानमंत्री नामित करने वाला कौन था ?

तो राहुल गाँधी को स्टालिन के सवाल का जवाब तलाशना होगा। कारक कौन बनेगा ? नेहरु और इंदिरा गाँधी तो अपनी मेहनत और भागदौड़ के फलस्वरूप प्रधानमंत्री बन गए। राजीव गाँधी ने तो अपनी माता के प्राणोत्सर्ग के बाद घनघोर दावेदार प्रणव मुखर्जी को बाहर कर दिया था और पीएम पद पा लिया। सोनिया के पीएम बनते-बनते उनका प्याला ओठों से छूकर फिसल गया था। अतः राहुल गाँधी के पास क्या उपाय या साधन होंगे ? न संख्याबल है, न दल बचा, साथी बिखर गए। शायद चेम्बरलेन की भांति उनकी भी लाटरी निकल आये ! 0चेम्बरलेन के स्टेनली बाल्डविन और विंस्टन चर्चिल जैसे प्रबल प्रतिस्पर्धी भी थे। राहुल गाँधी से उनकी सियासी सरगोशियों के बीच जिंदगी ऐसा सवाल तो करेगी ही।

लाल जी टण्डन: वैचारिक विरासत का निर्वाह

डॉ. दिलीप अग्निहोत्री

मध्य प्रदेश के राज्यपाल लाल जी टण्डन अब हमारे बीच नहीं रहे। उन्होंने अपनी पुस्तक क्क्षनकहा लखनऊ में अनेक तथ्य उजागर किये थे। मिलनसार होना लखनऊ का चिर परिचित मिजाज रहा है, लाल जी टण्डन की जीवन शैली भी इसी के अनुरूप थी। तरुणावस्था में वह राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से जुड़े। यहीं से उनका सामाजिक जीवन शुरू हुआ। इसके बाद समाज के बीच रहना, हमेशा लोगों से मिलना-जुलना, सभी के सुख-दुख में सहभागी होना, उनके स्वभाव का हिस्सा बन गया। उन्होंने सामाजिक जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव देखे, पार्षद से लेकर सांसद, मंत्री, राज्यपाल तक हुए लेकिन उनके मूल स्वभाव में कभी परिवर्तन नहीं हुआ। अटल बिहारी वाजपेयी को राजनीति में अजातशत्रु कहा जाता है। लाल जी टण्डन उनके अनुज की तरह थे। अटल जी की तरह उन्हें भी यही पहचान मिली। राजनीति में मतभेद खूब रहा लेकिन उन्होंने भी अटल जी की तरह मनभेद पर विश्वास नहीं किया। वैचारिक प्रतिबद्धता सदैव रही, कभी उससे विचलित नहीं हुए।

एकबार लखनऊ राजभवन में उनसे मुलाकात हुई। वही उनकी चिरपरिचित सहजता। तब वह चुनावी राजनीति से अलग हो चुके थे। लखनऊ से उन्होंने दोबारा लोकसभा चुनाव लड़ने से इनकार कर दिया था। मैंने टण्डन जी से कहा कि आप इस समय राजभवन में आये हैं, मेरी अभिलाषा है कि आप राजभवन में रहें। वह मुस्कराये, बोले क्या मतलब? उन्होंने मेरे कथन पर क्या सोचा होगा, मैं नहीं जानता। मैंने कहा कि आप भी राज्यपाल बनें। उन्होंने जो कहा उससे उनके राजनीतिक सिद्धान्त व वैचारिक निष्ठा का अनुमान लगाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि राजनीति में पहले दिन से लेकर आजतक मैंने अपने लिए कुछ नहीं मांगा। किसी पद की अभिलाषा नहीं की,अपने बारे में स्वयं कोई निर्णय नहीं लिया। जो पार्टी का आदेश हुआ, उसपर अमल किया। यह सुखद संयोग था कि इसके कुछ समय बाद वह बिहार के राज्यपाल बनाये गए। इसके पहले संवैधानिक मर्यादा के अनुरूप भाजपा से त्यागपत्र दे दिया था। इसके बाद उन्हें मध्य प्रदेश का राज्यपाल नामित किया गया था। दोनों प्रदेशों में उन्होंने संविधान के अनुरूप अपने दायित्वों का निर्वाह किया। वहां के लोगों से संवाद बनाये रखा। सीमित समय में ही बिहार और मध्य प्रदेश में आमजन के बीच रहने वाले राज्यपाल की उनकी छवि बनी थी। वैचारिक निष्ठा के उनके कथन का एक संस्मरण याद आया। टण्डन जी लखनऊ में पत्रकारों को चाट की दावत पर आमंत्रित करते थे। यह उनका नियम बन गया था। इसमें बड़ी सहजता से वह सभी पत्रकारों से मिलते, बातें करते थे। एकबार राजकुमार प्लाजा के सामने स्थित उनके सरकारी आवास पर ऐसी ही चाट पार्टी थी। राजनीति की हल्की-फुल्की बातें भी चल रही थी। एक प्रश्न के जवाब में टण्डन जी ने आवास के बगल में स्थित ऊंची दीवार की ओर इशारा किया। कहा कि पार्टी आदेश करे तो मैं इस दीवार से भी कूद जाऊं। उनकी बात पर ठहाका लगा लेकिन यह उनकी वैचारिक निष्ठा को उजागर करने वाला प्रतीक था। वह भारतीय जनसंघ के सदस्य बने, तब संघर्ष का दौर था। तब यह माना जाता था कि कांग्रेस के व्यापक प्रभुत्व को तोड़ा नहीं जा सकता। जनसंघ की स्थापना सत्ता के लिए नहीं हुई है इसलिए पद नहीं सेवा की प्रेरणा वाले ही इसके सदस्य बनते हैं। टण्डन जी भी उन्हीं में एक थे। परिवार व व्यवसाय से अधिक ध्यान वह समाज सेवा में लगाते थे। पार्टी के आदेश पर वह पूरी क्षमता से अमल करते थे। बसपा से गठबंधन का निर्णय भी उनका नहीं था लेकिन जब दायित्व मिला तो वही उसके शिल्पी थे। टण्डन जी के सामाजिक जीवन की शुरुआत सामाजिक सांस्कृतिक संगठन आरएसएस से हुई थी। 1960 में वह सक्रिय राजनीति में आये। दो बार पार्षद और दो बार विधान परिषद् सदस्य रहे। तीन बार विधानसभा और एकबार लोकसभा के लिए निर्वाचित हुए। प्रदेश की कल्याण सिंह, बसपा गठबन्धन और राजनाथ सिंह की सरकारों में वे कैबिनेट मंत्री रहे। इसके अलावा विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष का दायित्व भी उन्होंने बखूबी निभाया था। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के राजनीति से दूर होने के बाद लखनऊ लोकसभा सीट खाली हुई थी। उनके उत्तराधिकारी के रूप में पार्टी ने उन्हें लखनऊ प्रत्याशी बनाया था। वह भारी बहुमत से विजयी हुए। वे अटल जी को अपना भाई, पिता, मित्र मानते थे। सादर नमन !

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

कोरोना : जब आया उफान, बेफिक्र हुआ इंसान !

कोरोना पर हर रोज चौंकाने वाले आंकड़े भले दुनिया भर की सरकारों के लिए चिन्ता का बड़ा कारण हों लेकिन यह भी सच है कि भारत में लोग जितने बेफिक्र दिख रहे हैं, उतना लॉकडाउन के दौर में कतई नहीं थे। क्या यह कोई मनोवैज्ञानिक स्थिति है या फिर कहीं न कहीं सच को स्वीकारती मनोदशा, जिसे लेकर लोग इतने असंवेदनशील और सहज हो गए हैं कि जो हो रहा है वो भी मंजूर और जो होने की चर्चा है, वह भी मंजूर! यकीनन यह मानसिक स्थिति कोरोना संक्रमण से भी कई गुना खतरनाक है क्योंकि लगता नहीं कि करुणा मर चुकी है?

ऋतुपर्ण दवे

लोग कोरोना के भयावह मंजर को देखने के डर को बुझे मन से ही सही, मान तो नहीं चुके? ऐसे में कोरोना से बड़ी जंग मानसिक स्थिति को मजबूत कर जीतनी होगी। आज जब कोरोना हर रोज अपने उफान यानी पीक पर पहुंच रहा है और लोग हैं कि बेफिक्र होते जा रहे हैं? यह स्थिति बेहद चिन्ताजनक है। सोचना होगा कि लोग अपने स्वास्थ्य को लेकर एकाएक क्यों इतने गैर जिम्मेदार हो गए हैं? कोरोना की जंग में खुद को बेहद मजबूत रख कर ही लड़ाई जीती जा सकेगी। अभी तो लड़ाई शुरू हुई है जो कठिन जरूर है लेकिन जीती जाने वाली भी है। ऐसे में बस जरूरत है तो इतनी कि मजबूत इच्छा शक्ति से कोरोना को चुनौती दें न कि स्वीकारें। तो फिर बेफिक्री कैसी? इसको लेकर निश्चित रूप से देश व राज्य सरकारें अपनी-अपनी तरफ से जरूर फिक्रमंद होंगी और लोगों के मन में अनायास घर कर गए एक धीमे अवसाद की चिन्ता भी होगी।

कोरोना को लेकर एक बड़ी सच्चाई जो जगजाहिर है कि इसकी पूरी तासीर किसी को नहीं पता थी और अभी भी नहीं है। पूरी तरह से लाइलाज यह वायरस नए रंग-रूप दिखाकर डराता ही जा रहा है। कोई दवा या वैक्सीन न होने से इससे बचाव का प्राकृतिक तरीका 'लॉकडाउन' ही काफी कारगर, स्वीकार्य और तात्कालिक आसान उपाय बन गया। भारत ने भी यही किया जिसके अच्छे नतीजे आए लेकिन यह भी सच है कि कबतक पूरा देश तालाबन्दी में रहता ! 67 दिनों की तालाबन्दी से संक्रमण की रफ्तार काफी हद तक बेकाबू नहीं हो पाई, जैसा कई देशों में दिखा। इससे अर्थव्यवस्था और दीगर गतिविधियां काफी पीछे जा रही थीं इसलिए अनलॉक-1 की घोषणा हुई। जिसके बाद कम से कम भारत में तो बेहद हैरान करने वाली तस्वीरें सामने आईं जो बेहद निराशजनक रहीं। लोगों ने जैसे मुक्ति का जश्न मनाना शुरू कर दिया और कोरोना के आगे समर्पण कर दिया। तभी तो संक्रमण के उफान के बीच बजाए इससे बचने के, उपायों तक की जबरदस्त अनदेखी की गई। नतीजतन देखते ही देखते कोरोना की रफ्तार भारत में ऐसी बढ़ी कि दुनिया का तीसरा संक्रमित देश बन गया और दूसरा बनने की होड़ में है।

कोरोना के बढ़ते आंकड़ों जिसमें बीते एक हफ्ते में ही हर रोज 30 से 35 हजार के बीच मामलों के बावजूद लोगों में डर वाली बात खत्म-सी हो गई हो। कोरोना के 11 लाख से भी पार पहुंचते आंकड़ों ने न केवल पूरी दुनिया की नजरों में भारत को लेकर चिन्ता बढ़ा दी, वहीं खुद भारत में ऐसी बेफिक्री कि लोग झुण्डों में पहले जैसे नजर आने लगे, हैरान करती है। जहां बाजारों, सार्वजनिक स्थानों में भीड़ बढ़ी, वहीं सब्जी, मांस-मटन के बाजारों व मंडियों में पुरानी धमा-चौकड़ी लौट आई। आलम यह हो गया कि लोग खुद से मास्क तक न पहनने

पर उतारू हो गए। यह सब बेहद हैरान करता है। तेजी से बढ़ रहे संक्रमण और मौतों के बढ़ते आंकड़ों के बीच यह अजीब-सी बल्कि कहें कि सार्वजनिक सामाजिक मानसिक स्थिति ही है जो गंभीर हताशा या महामारी की स्वीकार्यता का इशारा तो नहीं? यदि ऐसा है तो कोरोना से पहले लोगों को इससे उबारना होगा।

हो सकता है कि 67 दिन लंबे उबाऊ लॉकडाउन के बीच लगातार चौकस व्यवस्थाओं को देखने, समझने और सुधारने वाले हर छोटे-बड़े हाथ लंबी सेवा देकर खुद भी थोड़ा ढील के मूड में क्या आए, सब जगह वह बेफिक्री दिखी जिसने कोरोना की कड़ी को इतना मजबूत बना दिया कि वह दोगुनी, चार गुनी और इससे भी तेज बढ़ने लगी। यह सच है कि हमारी स्वास्थ्य व्यवस्थाएं उतनी चुस्त-दुरुस्त नहीं है जितनी अमेरिका, ब्रिटेन, रूस, जर्मनी, जापान जैसे देशों की है। लॉकडाउन के बीच मिले वक्त में भविष्य की व्यवस्थाओं की तैयारियां भी हुई, जिसमें अस्पताल, वैन्टीलेटर, बिस्तरों की व्यवस्था की गई। लेकिन यह भी सच है कि भारत जैसे देश के लिए यह कुछ यूं नाकाफी है जैसे दाल में नमक। आम भारतीयों का मौजूदा रवैया जरूर चिन्ता में डाल रहा है।

तालाबन्दी के दौर में क्या छोटे, क्या बड़े सभी ने जिस एकजुटता से दिशा-निर्देशों का पालन किया, वो अनलॉक होते ही छिन्न-भिन्न हो गया। जबकि देश में हजारों ऐसे उदाहरण भी दिखे जहां एक घर में रहने वाले सदस्यों तक ने आपसी सोशल डिस्टेंसिंग बना जरूरी ऐहतियातों की पालना की थी। चन्द हफ्तों पहले का वो दौर और मौजूदा यह दौर बेहद बदला है और लोग बेफिक्र दिख रहे हैं। सबकुछ हैरान करने वाला है। तालाबन्दी के पहले और बाद कोरोना संक्रमण के बीच देश वही, लोग वही, सरकारी मशीनरी वही और कानून-कायदे भी वही। बस एक अनलॉक की छूट क्या मिली सबकुछ धरा रह गया ! निश्चित रूप से इंसानियत के लिहाज से यह कभी भी सही नहीं ठहराया जा सकेगा। हो सकता है लॉक से अनलॉक हो रहे लोगों की समझाइश में कमी रह गई हो? यह सच है कि इसको लेकर देशव्यापी कांउन्सिलिंग और सख्ती के साफ और कड़े निर्देशों की कमी भी एक कारण हो।

यह सच भी सामने है कि देश के पहले 1 लाख मामले सामने आने में 111 दिनों का समय लगा जो 19 मई को हुए। उसके बाद 2 लाख मामलों का आंकड़ा छूने में केवल 15 दिन लगे जो 3 जून को हुए। इसी तरह 3 लाख मामले पहुंचने में 10 दिन लगे जो 13 जून को हुए। जबकि संक्रमितों की संख्या 4 लाख पहुंचने में 8 दिन लगे जो 21 जून को हुए। उसके बाद केवल 6 दिन में संक्रमितों की संख्या 5 लाख को पार गई जो 27 जून को हुई। महज 5 दिन बाद यानी 2 जुलाई को संख्या 6 लाख पहुंची और उसके 5 दिन बाद यानी 7 जुलाई को यह संख्या 7 लाख हो गई। अगले तीन दिनों में यानी 10 जुलाई को कोरोना संक्रमितों की संख्या 8 लाख हो गई। रफ्तार थमने के बजाए बरकरार रही जो 19 जुलाई की तड़के 10 लाख 77 हजार 864 पर जा पहुंची जबकि इसी दिन अबतक का एकदिन में संक्रमित मरीजों के मिलने का डरावना रिकॉर्ड 37407 भी बना।

संक्रमण की बढ़ती रफ्तार भयावह है। ईश्वर न करे, हालात ब्राजील और अमेरिका जैसे हो जाएं लेकिन लॉकडाउन के बाद जनमानस का जो मिजाज दिखा, उसे देखते हुए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विशेषज्ञ भी मानते हैं कि संक्रमण की रफ्तार को रोकने के लिए दोबारा देशव्यापी लॉकडाउन से सरकार को परहेज नहीं करना चाहिए। इसके साथ ही इस बात का भी भली-भांति प्रचार-प्रसार कर मानसिक रूप से लोगों को तैयार करना होगा कि वो आगे अनलॉक होने पर कैसे खुद, देश और समाज को सुरक्षित रख सकते हैं। सभी इस बात को अपनी नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी भी समझें कि मास्क, सोशल डिस्टेंसिंग और सेनिटाइजेशन जीवन का तबतक हिस्सा रहेगा जबतक कोरोना की कड़ी को तोड़ने कोई दवा रूपी चाबुक ईजाद नहीं हो जाता। इसके लिए बेहद कड़ाई और कानूनन सख्ती से भी पीछे नहीं हटना होगा। कोरोना से बड़ी जंग हमारी अपनी इच्छा शक्ति को मजबूत करने की है।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

जीवन में बाधाएं सीढ़ियां भी बन सकती है

ओशो

0जीवन में कुछ भी दुर्भाग्य नहीं है। बाधाएँ ही सीढियाँ भी बन सकती हैं।। और सीढियाँ बाधाएँ भी बन सकती हैं।। सौभाग्य और दुर्भाग्य तुम्हारे हाथ में है। जीवन तटस्थ अवसर है। एक राह पर बडा पत्थर पडा हो, तुम वहीं अटक के बैठ सकते हो कि अब क ।लशपीं;से जाएँ,पत्थर आ गया। तुम उस पत्थर पे चढ भी सकते हो। और तब तुम पाओगे कि पत्थर ने तुम्हारी ऊँचाई बढा दी। तुम्हारी दृष्टि का विस्तार बढा दिया। तुम रास्ते को और दूर तक देखने लगे। और पत्थर के बिना देखना संभव न था। पत्थर सीढी हो गया। ये प्रश्न है कि म ।लशपीं;ने प्रेम जीवन में नहीं जाना, यही मेरे जीवन की चुभन रही। चुभन मत समझो अब। प्रेम नहीं जाना, निश्चित ही इसीलिए ध्यान की तरफ आना हुआ। उसे सौभाग्य बना लो। अब प्रेम की बात ही छोड दो। क्योंकि जिसने ध्यान जान लिया, प्रेम तो उसकी छाया की तरफ अपने आप आ जाएगा। दो ही विकल्प है परमात्मा को पाने के। दो ही राहें हैं।। एक है प्रेम, एक है ध्यान। जो मिलता है वो तो एक ही है। कोई प्रेम से उसकी तरफ जाता है। उस रास्ते की सुविधाएँ हैं।, खतरे भी। सुविधा ये है कि प्रेम बडा सहज है, स्वाभाविक है। खतरा भी यही है। इतना स्वाभाविक है कि उसमें उलझ जाने का डर है। होश नहीं रहता। बेहोशी हो जाती है। इसलिए अधिक लोग प्रेम से परमात्मा तक नहीं पहुँचते, प्रेम से छोटे-छोटे कारागृह बना लेते हैं।, उन्हीं में बंद हो जाते हैं।। प्रेम बहुत कम लोगों के लिए मुक्ति बनता है। अधिक लोगों के लिए बंधन बन जाता है। प्रेम अधिक लोगों के लिए राग बन जाता है; और जब तक प्रेम विराग न हो तब तक परमात्मा तक पहुँचना नहीं होता। तो प्रेम की सुविधा है कि वो स्वाभाविक है। प्रत्येक व्यक्ति के भीतर प्रेम की उमंग है। खतरा भी यही है कि वो इतना स्वाभाविक है कि उसमें होश रखने की जरूरत नहीं। तुम उसमें उलझ सकते हो। जिनके जीवन में प्रेम नहीं संभव हो पाया--और बहुत लोगों के जीवन में संभव नहीं हो पाया--तो बैठके काँटे को पकड कर मत पूछते रहो। नहीं प्रेम संभव हुआ, चिंता छोडो। ध्यान संभव है। और ध्यान के भी खतरे हैं। और सुविधाएँ। खतरा यही है कि श्रम करना होगा, चेष्टा करनी होगी। प्रयास और साधना करनी होगी। संकल्प करना होगा। जरा भी शिथिलता की तो ध्यान न सधेगा। अगर जरा भी आलस्य की तो ध्यान न सधेगा। अगर ऐसे ही सोचा कि कुनकुने-कुनकुने कर लेंगे, तो न सधेगा। जलना पडेगा। सौ डिग्री पर उबलना पडेगा। ये तीन कठिनाइयां हैं।। लेकिन फायदा भी है कि थोडा भी ध्यान सधे, तो साथ में होश भी सधता है। क्योंकि प्रयास, साधना, संकल्प। इसलिए ध्यान सधे, तो कभी भी कारागृह नहीं बनता। कठिनाई है सधने की। प्रेम सध तो जाता है बडी आसानी से, लेकिन जल्दी ही जंजीरें ढल जाती हैं। ध्यान सधता है मुश्किल से, लेकिन सध जाए तो सदा ही मोक्ष और सदा ही मुक्ति के आकाश की तरफ ले जाता है।

रसुखदार जुआरी पुलिस टीम को देख हुए फरार, मौके से 9 जुआरी को किया गिरफ्तार

पुलिस ने 25 बाईक, 8 मोबाईल, तास पत्ते के साथ 1 लाख 58 हजार रूपए किए जप्त

माही की गूंज खरगोन

जिलें के थाना बिस्टान के अंतर्गत ग्राम खड़किया घाट में पुलिस अधीक्षक शैलेन्द्रसिंह चौहान के निर्देशन में जिला मुख्यालय से पुलिस टीम गठित कर दबिश हेतु भेजी गई ।

दबिश के दौरान गाम खड़किया घाट के नेपाल भीलाला के खेत के पास नाले पर दामखेड़ा रोड़ पर जुआ खेल रहें 9 व्यक्तियों को हिरासत में लिया गया। जुआ खेल रहे व्यक्तियों से 1 लाख 58 हजार एक सौ रूपये नगदी बरामद किए। साथ ही घटना स्थल से एक ताश की गड्डी, 25 दो पहिया वाहन, तथा 8 मोबाईल फोन जप्त किये गए।

पुलिस की गिरफ्त में आए ये जुआरी

मदन पिता सखराम मोची (48) निवासी भगवानपुरा, उमेश पिता छिंडिया बारेला (34), निवासी चौंखड धुलकोट, कैलाश पिता आपसिंह बारेला निवासी दामखेड़ा, रंजीश पिता श्रीधर दांगी (45) निवासी पहाड़सिंगपुरा, जयराज पिता जगनसिंह दांगी (50) निवासी पहाडसिंगपुरा, मुकेश पिता गंगाराम (38) निवासी बिस्टान, नानाजी पिता हिराजी यादव (59) निवासी लवकुश विहार कॉलोनी खरगोन, धर्मेन्द पिता

बाबुलाल तिवारी (54) निवासी पहाडसिंगपुरा खरगोन तथा दीपक पिता नत्थुसिंह रघुवंशी (40) निवासी पहाड़सिंगपुरा खरगोन को गिरफ्तार कर उनके विरूद्ध थाना बिस्टान पर अपराध क्रं. 225/20 धारा 13 ए जुआ एक्ट पंजीबद्ध कर अनुसंधान में लिया गया हैं। आरोपियों से पूछताछ किये जाने पर मौके से मुख्य आरोपी लाला निवासी खडकिया सहित अन्य 15-20 रसुखदार पुलिस को देख फरार हो गए है, उक्त आरोपीयों की तलाश की जा रहीं हैं।

उक्त कार्यवाही में उनि दीपक यादव , प्र.आर. दिलीप ठाकरे , आर. अमित , आर. अभिलाष , आर. पिंटु , आर. अतुल, आर. सूर्या, आर. सुमित, आर. शुभम, आर सोनु का विशेष सराहनीय योगदान रहा ।

गौवंश की सुरक्षा पर विशेष दिया जाए ध्यान

पशुपालन मंत्री श्री पटेल ने की विभागीय समीक्षा

माही की गूंज बड़वानी

पशुपालन एवं सामाजिक न्याय मंत्री प्रेमसिंह पटेल ने कहा है कि, गौ-शालाओं के निर्माण के साथ-साथ गौवंश की सुरक्षा पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाना चाहिए। इसके लिये स्थानीय स्तर पर पंचायत और नगर पालिका को जिम्मेदारी दिये जाने के लिये कार्यवाही सुनिश्चित की जाए। श्री पटेल मंत्रालय में पशुपालन विभाग की समीक्षा कर रहे थे।

मंत्री श्री पटेल ने कहा कि, पशुपालन विभाग के अंतर्गत गौ-शालाओं और अन्य विभागीय योजनाओं को जिला पंचायतों की होने वाली बैठकों के स्थाई ऐजेन्डा में रखा जायें जिससे इन योजनाओं के क्रियान्वयन के साथ-साथ स्थानीय स्तर पर सतत मॉनिटरिंग भी की जा सके। मंत्री श्री पटेल ने कुक्कट व्यवसाय को बढ़ावा देने के निर्देश भी दिये।अपर मुख्य सचिव, पशुपालन जे.एन. कंसोटिया ने पशुपालन विभाग में संचालित विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी। बैठक में बताया गया कि राष्ट्रीय स्तर पर पशुओं की सगणना 2012 के बाद 20वीं पशु संगणना पिछले वर्ष 2019 में हुई। इसमें प्रदेश के सभी जिलों में 4 करोड़ 6 लाख पशुधन पाए गए जो पिछली संगणना से 11.81 फीसदी ज्यादा है। इस तरह 1 करोड़ 66 लाख 59 हजार कुक्कटों की संख्या है जो पिछले संगणना की तुलना में तकरीबन 40 फीसदी अधिक है।

संचालक, पशुपालन आर.के रोकड़े ने बताया कि, राष्ट्र के सकल घरेलू उत्पाद में पशुपालन का योगदान 6.91 प्रतिशत जबकि प्रदेश में पशुपालन का योगदान 6.91 प्रतिशत है। राष्ट्रीय स्तर पर कृषि के सकल घरेलू उत्पाद क्षेत्र में 28.40 प्रतिशत और प्रदेश में 17.50 प्रतिशत पशुपालन का योगदान है।

कलेक्टर, एसपी घूमे शहर में, कोरोना में आदेश नहीं मानने वाले दुकानदारों पर लगाया जुर्माना

माही की गूंज बड़वानी

कलेक्टर शिवराजसिंह वर्मा एवं पुलिस अधीक्षक निमिष अग्रवाल बुधवार की शाम को नगर में घूमे एवं इस दौरान जो भी दुकानदार या राहगीर बिना मास्क के मिले, उन पर अपने समक्ष जुर्माना लगवाकर वसूलने की कार्रवाई। साथ ही दुकानदारो को चेतावनी दी है कि, यदि बिना मास्क लगाये आए लोगो को सामान दिया तो जहॉ संबधित व्यक्ति से जुर्माने की राशि वसूली जायेगी, वही दुकानदार पर भी जुर्माना लगाकर वसूलने की कार्रवाई की जावेगी। इस दौरान उनके साथ एसडीएम बड़वानी सुश्री अंशु जावला, नगर पालिका सीएमओ कुशलसिंह डोडवे, टीआई राजेश यादव, तहसीलदार राजेश पाटीदार भी थे।

शराब की दुकान पर लगाया जुर्माना, दी चेतावनी

कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षक ने अंजड़ नाका क्षेत्र की विदेशी शराब दुकान एवं पाला बाजार की देशी मदिरा दुकान का भी निरीक्षण किया। इस दौरान सोशल डिस्टेंस के नियम का उल्लंघन होने एवं दुकान के आस-पास ही बैठकर लोगो द्वारा शराब पीने पर संबधित दुकानदारों को चेतावनी दी कि अगली बार यदि सोशल डिस्टेंस के नियम का उल्लंघन हुआ या कोई दुकान के आस - पास बैठकर या खड़े होकर शराब पीता हुआ मिला तो दुकान का लायसेंस निरस्त करने की कार्यवाही की जायेगी । इस दौरान अधिकारी द्वय ने नगरपालिका सीएमओ से अपने समक्ष 11 - 11 सौ रूपये का जुर्माना वसूलने की कार्यवाही भी करवाई ।

कपड़ों की दुकान पर भी हुई कार्रवाई

कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षक ने नगर भ्रमण के दौरान पैदल घूमते हुए बोहरा मोहल्ले में संचालित दो बड़ी कपड़े की दुकानो पर भी जुर्माना लगाकर वसूलने की कार्रवाई की, इन दोनो दुकानो पर जहॉ सोशल डिस्टेंस के नियम का उल्लंघन हो रहा था, वहीं संबंधित दुकानदारो द्वारा भी मास्क लगाने के नियम का उल्लंघन किया जा रहा था। इसी प्रकार कारगिल चौराहे की एक किराना दुकानदार के विरूद्ध भी जुर्माना वसूलने की कार्रवाई की गई। मौके पर कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षक ने दुकानदार को बिना मास्क लगाये खरीददार को सामान देते हुये पाया था ।

अधिकारी घूमे तीन किलोमीटर पैदल

नगर में सोशल डिस्टेंस एवं मास्क लगाने के नियम का पालन करवाने हेतु सड़क पर पैदल घूमे कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षक ने लगभग तीन किलोमीटर पैदल घुमे व चालानी कार्यवाही की। अस्पताल चौराहे से पैदल चलते हुए अधिकारी द्वय झण्डा चौक, बोहरा मोहल्ला, पाला बाजार, सब्जी मण्डी, रामदेव मार्ग, मोटी माता, कारंजा चौराहा होते हुए पुनः अस्पताल चौक पहुंचे। इस दौरान उन्होने मार्ग में बिना मास्क के मिले जहॉ लोगो को चेतावनी दी, वहीं मोटर सायकल पर बिना मास्क के चल रहे लोगो को रोककर जुर्माना लगवाने की कार्यवाही भी की।

बिना मास्क नही दिया जाए सामान

नगर के भ्रमण के दौरान कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षक ने दुकानदारों से आव्हान भी किया कि, कोरोना वायरस के मद्देनजर सोशल डिस्टेंस एवं मास्क लगाने के नियम का पालन करवाना एवं करना हम सभी की जिम्मेदारी है। अतः सभी दुकानदार प्रण करें कि, ऐसे ग्राहक को सामान विक्रय नहीं करेंगे, जो बिना मास्क लगाए उनकी दुकान पर आएगा।

बनाये गये 318 चालान में वसूली गई 41 हजार से अधिक की राशि

जिले में आज से प्रारंभ बिना मास्क कोई नहीं, सभी करेंगे सोशल डिस्टेंस का पालन अभियान के दौरान बुधवार को सम्पूर्ण जिले में 318 चालान बनाये गए । इसमें से 160 ग्रामीण क्षेत्र में तो 158 नगरीय क्षेत्र में। इस दौरान 41 हजार 50 रूपये की राशि वसूलने की कार्यवाही की गई है।

जारी रहेगा अभियान

कलेक्टर शिवराज सिंह वर्मा एवं पुलिस अधीक्षक निमिष अग्रवाल ने बताया कि, यह अभियान सतत प्रारंभ रहेगा। अतः बाहर निकलने वाला प्रत्येक व्यक्ति मास्क लगाने के नियम एवं सोशल डिस्टेंस बनाये रखने का पालन अनिवार्य रूप से करें, जिससे उन्हें अनावश्यक रूप से परेशान न होना पड़े । अधिकारी द्वय ने बताया कि कुछ लोगो की लापरवाही से दूसरे लोगो को परेशान नही होने दिया जायेगा। जो लोग इस नियम का उल्लंघन करते हुये मिलेंगे, उन्हें बिना दण्डित छोड़ा नही जायेगा ।

खुशियों की दास्तान

स्ट्रीट वेण्डर योजना से अब्बास हुसैन बने अपने व्यापार के मालिक

माही की गूंज बड़वानी

पिता का साया 12 साल पहले ही उठ गया था, उपर से कोरोना वायरस की परिस्थितियों से उत्पन्न लॉकडाउन ने मजदूरी से भी मोहताज कर दिया था। ऐसे में छोटे से 4 सदस्यीय परिवार का गुजर - बसर भी मेहनती अब्बास हुसैन जमादार के लिये मुश्किल हो गया था। किन्तु अब प्रधानमंत्री पथ विक्रेता आत्मनिर्भर योजना ने उन्हें नई राह दिखाई है। जिससे वे अब अपने व्यापार के स्वयं मालिक बन मजदूरी के रूप में मिलने वाली राशि से ज्यादा आर्थिक उपार्जन करने लगे है।

बड़वानी नगर के 40 वर्षीय अब्बास हुसैन जमादार बताते है कि, वे कक्षा 8वीं तक ही पढ़े - लिखे है।

उपर से पिताजी का साया भी 12 साल पहले ही उठ गया था, ऐसे में माताजी, एक पुत्री और अपनी पत्नि का भरण - पोषण करने के लिये उनके पास मेहनत मजदूरी के सिवा और कोई विकल्प नही था । किराये के ठेले पर वे चलती फिरती प्लास्टिक की वस्तुए एवं क्राकरी की दुकान लेकर मोहल्ले - मोहल्ले जाते थे । पूंजी के अभाव के कारण लोगो की मांग अनुसार वस्तुए ठेले पर नही रख पाने के कारण उनकी आय बहुत ही कम थी।

अब्बासी हुसैन जमादार अब खुशी - खुशी बताते है कि जब से उन्हें प्रधानमंत्री पथ विक्रेता आत्मनिर्भर योजना के तहत बिना ब्याज के 10 हजार रूपये की राशि मिली है, तब से उनकी जिन्दगी की गाड़ी अच्छी चलने लगी है। इस राशि से उन्होने जहॉ अपना स्वयं का ठेला ले लिया है, वहीं उस पर ग्राहको की मांग अनुसार प्लास्टिक निर्मित क्वालिटी वाला सामान भी रखने लगे है, इससे उनकी ग्राहकी बढ़ गई है। जिससे वे अब शहर के कई मोहल्लो में जाकर फेरी लगाने लगे है इससे उनकी आमदनी बढ़कर इतनी हो गई है कि वे अपने परिवार का गुजर - बसर अच्छी से करते हुये बिना ब्याज पर मिले ऋण की किस्त सहजता से अदा कर सकेंगे ।

ट्रक चोरी का आरोपी गिरफ्तार

माही की गूंज खरगोन

खरगोन पुलिस द्वारा दो दिन में ट्रक चोरी करने वाले आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश कर दिया है, जहां से उसे जेल भेज दिया है। पुलिस अधीक्षक कार्यालय से प्राप्त जानकारी के अनुसार 19 जुलाई 2020 को फरियादी युसूफपिता काले खान निवासी मोहन टॉकीज टेकड़ी मोहल्ला खरगोन ने थाना खरगोन में रिपोर्ट दर्ज कराई कि उन्होंने अपना ट्रक खंडवा रोड़ पर सालीमार होटल के पास खड़ा किया था, जिसे कोई अज्ञात चुराकर ले गया है। फरियादी की रिपोर्ट पर थाने में 529/2020 धारा 379 भादवि का अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। चोरी की घटना को देखते हुए पुलिस अधीक्षक शैलेंद्रसिंह चौहान एवं एएसपी जितेंद्रसिंह पंवार ने गंभीरता से लेते हुए त्वरित कार्यवाही करने के निर्देश दिए। प्राप्त निर्देशों पर थाना प्रभारी द्वारा टीम का गठन किया और कार्यवाही शुरू की और आसपास के जिले खंडवा, बड़वानी, धार एवं इंदौर को कंट्रोल रूम के माध्यम से सूचित कर सभी थानों पर नाकाबंदी कराई गई। इस दौरान मूखबीर से प्राप्त सूचना पर आरोपी श्यामलाल उर्फश्याम पिता महेंद्र सोलंकी निवासी ग्राम बोरखेड़ा थाना बिस्टान को ट्रक सहित धरदबोचा और गिरफ्तार कर खरगोन न्यायालय में पेश किया। न्यायालय ने आरोपी को जेल भेज दिया। कार्यवाही में थाना प्रभारी जगदीश गोयल, उनि पप्पू मोर्य, छत्रपालसिंह धुर्वे, आर लक्ष्मीकांत मीणा, रामलाल सेलवाने, रमेश खेड़े व सैनिक राकेश यादव का सराहनीय योगदान रहा।

आंशिक संशोधन: धोखाधड़ी करने वाली चिटफंड कंपनियों के विरूद्ध पुलिस थानों में शिकायत कराएं दर्ज

24 जुलाई को संबंधित थानों में लगाया जाएगा शिकायत कैंप

माही की गूंज खरगोन

चिटफंड कंपनियों एवं चेन बैंकिंग कंपनियों के द्वारा अनाधिकृत रूप से नागरिकों को लुभावनें प्रलोभन देकर उनसें बडी मात्रा में धनराशि अथवा बहुमूल्य संपत्ति प्राप्त कर धोखाधड़ी की जाती है। ऐसी धोखाधड़ी करने वाली कंपनियों और फर्मो के विरूद्ध वैधानिक कार्यवाही के लिए जिला एवं पुलिस प्रशासन द्वारा अभियान चलाया जा रहा है। इसी के अंतर्गत किसी भी नागरिक के साथ ऐसी किसी चिटफंड कंपनी या फर्म द्वारा सीधे तौर पर अथवा कंपनी के कर्मचारीध्डायरेक्टर व ऐजेंट के माध्यम से धोखाधड़ी, जालसाजी या धनराशि अपहृत की गई है, तो वे संबंधित थाने में इसकी मय दस्तावेजों के साथ शिकायत दर्ज करा सकते है। इसके अलावा हेल्पलाईन नंबर 7587620100 पर भी शिकायत दर्ज करवा सकते है। पुलिस अधीक्षक कार्यालय से प्राप्त जानकारी के अनुसार 24 जुलाई शुक्रवार को दोपहर 12 बजे से 3 बजे तक संबंधित थानों में शिकायत कैंपों का भी आयोजन किया जाएगा। कैंप में उपस्थित होकर चिटफंड कंपनियों व फर्मो के विरूद्ध धोखाधड़ी की शिकायत प्रस्तुत कर सकते है।

कृषि विभाग की कार्रवाई, उर्वरक अमानक पाए जाने पर शौकॉज नोटिस जारी

माही की गूंज खरगोन

कृषि उप संचालक एवं उर्वरक अनुज्ञप्ति प्राधिकारी एमएल चौहान द्वारा दूसरे दिन भी 2 कंपनियों के नमूने अमानक पाए जाने पर कारण बताओ सूचना पत्र जारी किए गए है। वहीं दो संस्थाओं से विक्रय-क्रय और परिवहन पर प्रतिबंध लगाया है। उप संचालक श्री चौहान ने बताया कि, 1 जुलाई को आदिम जाति सेवा सहकारी संस्था मर्यादित गढ़ी इफको कृषक सेवा केंद्र बड़वाह से उर्वरकों के नमूने लिए गए थे। नमूने लेकर जांच के लिए इंदौर स्थित प्रयोगशाला भेजे गए। प्रयोगशाला से प्राप्त रिपोर्ट के अनुसार नमूने अमानक स्तर के पाए गए। इस कारण मेसर्स जुआरी एग्रो केमिकल लिमिटेड गोवा, मेसर्स इंडियन फार्मर फर्टिलाईजर कॉपरेटिव लिमिटेड भोपाल को शौकॉज नोटिस जारी किए गए है। नोटिस जारीकर्ता अधिकारी श्री चौहान ने 7 दिनों के भीतर स्पष्टीकरण देने को कहा है। उर्वरक निर्माण कर जिन विक्रेताओं को विक्रय किया गया है उनकी सूची नाम व पत्र व्यवहार का पूर्ण पता जो व्यवसाय के लिए जिम्मेदार है उपलब्ध कराएं।

दो व्यक्ति को किया जिला बदर

माही की गूंज बड़वानी

जिला दंडाधिकारी बड़वानी ने पुलिस अधीक्षक की रिपोर्ट के आधार पर रोसर निवासी सिरला पिता हुसनिया बारेला एवं ग्राम आछली निवासी मुकेश पिता केशरसिंह बरडे को मध्य प्रदेश राज्य सुरक्षा अधिनियम के तहत 6 माह के लिए जिला बदर किया है ।

कलेक्टर कार्यालय से प्राप्त जानकारी अनुसार जिला बदर हुए उक्त दोनो अपराधियों को 24 घंटे के अंदर बड़वानी जिले की राजस्व सीमा से बाहर जाना होगा। वही वह अगले 6 माह तक बड़वानी सहित सीमावर्ती जिले धार, इंदौर, अलीराजपुर, झाबुआ, खरगोन, खंडवा, बुरहानपुर की राजस्व सीमा में भी प्रवेश नहीं कर पायेंगे ।

मास्क नहीं पहनने वाले ठेले संचालकों पर भी होगी कार्यवाही, जब्त होगा ठेला

माही की गूंज खरगोन

गत दिवस स्वामी विवेकानंद सभागृह में आयोजित जिला स्तरीय संकट प्रबंधन समुह की बैठक में निर्णय हुआ कि बिना मास्क पहनकर सामग्री बेचने वाले दुकानदार तथा सामग्री खरीदने वाले ग्राहक दोनों पर कार्यवाही होगी। दुकानदार की दुकानें अब 4 दिनों तक बंद की जाएगी। पूर्व में यह कार्यवाही 7 दिनों तक के लिए निर्धारित की गई थी। वहीं समुह के सदस्यों ने ठेला संचालकों ने भी इस दायरे में लाने पर सहमति दी। अब ठेले पर फेरी लगाकर सामान बेचने वाला यदि बिना मास्क के पाया गया, तो 4 दिनों के लिए ठेला जब्त किया जाएगा। इस संबंध में मंगलवार को आयोजित हुई बैठक में नगर पालिका के स्वास्थ्य अधिकारी प्रकाश चित्ते को निर्देश दिए गए। इसके लिए उन्हें मंगलवार से आगामी तीन दिनों तक ऐलान कर उसके पश्चात कार्यवाही करने की हिदायत दी गई। बैठक में कलेक्टर श्री गोपालचंद्र डाड ने समिति के सदस्यों ने कहा कि लोगों को रक्षाबंधन का पर्व अपने घरों में ही रहकर वीडियों कॉलिंग के माध्यम से मनाने का आव्हान किया। क्योंकि एक स्थान से दूसरे स्थान जाना जोखिम में डालने के समान है। इसलिए घर पर रहकर ही रक्षाबंधन पर्व मनाएं।

झोलाछाप उर्फ फर्जी डॉक्टरों का आतंक

कोरोना महामारी के बीच भी कर रहे धड़ल्ले से फर्जी क्लीनिक संचालित, मरीजों की जान के साथ हो रहा खिलवाड़

माही की गूंज, पेटलावद

कोरोना संक्रमण के लगातार बढ़ते प्रकोप के चलते पूरे देश में हाहाकार मचा हुआ है, लगातार कोरोना संक्रमण अपने पैर पसार रहा है। देश ही नहीं बल्कि पूरे मध्यप्रदेश सहित झाबुआ जिले में भी लगातार कोरोना के मामले सामने आ रहे हैं। ऐसे में शासन के द्वारा झोलाछाप उर्फफर्जी डॉक्टरों एवं क्लीनिकों को सख्त निर्देश है कि, कोई भी बुखार, सर्दी-खांसी जैसे लक्षण वाले मरीजों का उपचार ना करे, इन क्लिनिको पर सही उपचार ना मिलने की वजह से कोरोना संक्रमण बढ़ सकता है माना जा रहा है। किन्तु पेटलावद नगर सहित क्षेत्र में झोलाछाप डॉक्टरों की भरमार है। चाय की गुमटियों जैसी दुकानों में फर्जी डॉक्टर मरीजों का इलाज कर रहे हैं। मरीज चाहे उल्टी, दस्त, खांसी, बुखार से पीड़ित हो या फिर अन्य कोई बीमारी से, सभी बीमारियों का इलाज यह झोलाछाप उर्फफर्जी डॉक्टर करने को तैयार हो जाते हैं। मरीज की हालत बिगड़ती है तो उसे आनन-फानन में शासकीय चिक्तिसालय या किसी बड़े डाक्टर के पास भेज दिया जाता है। जानकारी अनुसार झोलाछाप डॉक्टरों द्वारा बिना पंजीयन के एलोपैथी चिकित्सा व्यवसाय ही नहीं किया जा रहा है बल्कि बिना ड्रग लाइसेंस के चोरी की दवाईयों का भंडारण व विक्रय भी अवैध रूप से किया जा रहा है। दुकानों के भीतर दवाईयों का अवैध तरीके से भंडारण रहता है। इन दिनों कोरोना संक्रमण सहित मौसमी बीमारियों का कहर है। फर्जी डॉक्टरों की दुकानें मरीजों से भरी पड़ी हैं, मौसम बदलने से उल्टी, दस्त, बुखार जैसी बीमारियां ज्यादा पनप रही हैं। झोलाछाप डॉक्टर बीमारियों का फायदा उठाकर मरीजों को जमकर लूटा जा रहा हैं, लेकिन जवाबदार सब कुछ देखकर भी अनदेखी कर रहे है।

पेटलावद , जामली , बनी और बेकलदा सहित पूरे विकास खण्ड में इस तरह कर रहे फर्जी डॉक्टरों इलाज

प्रत्येक गांव में फर्जी उर्फबांग्लादेशी व बंगाली झोलाछाप डॉक्टर'

विशेषज्ञों की मानें तो बंगाली क्लीनिक चलाने वाले लगभग 90 प्रतिशत डॉक्टरों के पास कोई डिग्री नहीं होती है, इतना ही इन बंगालियो में कई बांग्लादेशी भी है जिन्होने भारतीय मूल के दस्तावेज तक फर्जी रूप से बना रखे है, फर्जी दस्तावेज व बिना डिग्रीधारी यह डाक्टर मरीजों की जिंदगी से खिलवाड़ कर रहे हैं। गांवों में विभिन्न नामों से झोलाछाप डॉक्टरों की दुकानें चल रही हैं। क्षेत्र के रायपुरिया, बामनिया, जामली, करवड़, सारंगी, बरवेट, रूपगढ़, बेकलदा, बोडायता सहित कई स्थानों पर फर्जी उर्फ बांग्लादेशी डॉक्टर अपने फर्जी क्लीनिक संचालित कर रहे है।

ऐसे करते हैं इलाज

उक्त फर्जी डॉक्टर पहले उल्टा सीधा इलाज करते हैं, इसके बाद जब स्थिति काबू से बाहर हो जाती है तो किसी बड़े डॉक्टर को दिखाने के नाम पर अपना पीछा छुड़ा लेते हैं। हालांकि, तब तक स्थिति यह हो जाती है कि, मरीज को बचाया जाना संभव ही नहीं रहता है। ये डॉक्टर बुखार की जांच के लिए कोई भी टेस्ट तक कराने की सलाह नहीं देते हैं, उल्टी, दस्त आदि सामान्य बीमारियों के अलावा मियादी बुखार, डेंगू, मलेरिया, हैजा, पीलिया, मष्तिष्क ज्वर, चिकन पॉक्स व एलर्जी तक का इलाज करने से नहीं चूकते। बिना प्रशिक्षण के लोगों को इंजेक्शन लगाने के साथ ग्लूकोज व अन्य दवाओं की बाटल चढ़ा देते हैं। दवा का डोज की सही जानकारी न होने के बावजूद सामान्य बीमारी में लोगों को दवा का हैवी डोज दे देते हैं, इसके चलते कई बार लोगों को एलर्जी व शारीरिक अपंगता तक हो जाती हैं।

झोलाछाप डॉक्टरों का निर्धारण

ऐसा कोई भी चिकित्सक जो इंडियन मेडिकल काउंसिल व सेंट्रल काउंसिल फोर इंडियन मेडिसिन से पंजीकृत न हो, उसे झोलाछाप डॉक्टर कहा जाता है। साथ ही मेडिकल काउंसिल ऑफइंडिया के अधिनियम 1956 के शिड्यूल 1, 2 व 3 के तहत चिकित्सीय योग्यता नहीं रखता हो, ऐसे सभी डॉक्टर जो प्रैक्टिस करने वाले प्रदेश से पंजीकृत न हों, जो मुख्य चिकित्सा के अधीन पंजीकृत न हो, तकनीकी भाषा में ऐसे डॉक्टरों को अवैध डॉक्टर की संज्ञा दी गई है।

स्वास्थ विभाग की ही मिलीभगत

झोलाछाप और बंगाली डॉक्टर की पूरी सूची प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग के पास है समय-समय पर इन फर्जी झोलाछाप डॉक्टरों के यहाँ खानापुर्ति के साथ छापामार कार्यवाही की जाती है और मामला लेन-देन कर दबा दिया जाता है और ये फर्जी डॉक्टर फिर से अपनी दुकान लगाकर बैठ जाते हैं। मामले में विभाग के अधिकारियों से बात की गई तो उनका कहना है कि, जल्द ही झोलाछाप डॉक्टरों के विरुद्ध अभियान चलाया जाएगा।

हरियाली अमावस्या पर पत्रकार संघ सहित विभिन्न संस्थाओं ने किया पौधारोपण

माही की गूंज, पेटलावद/बामनिया

वृक्ष मानव जीवन का आधार है, हर व्यक्ति को कम से कम एक पौधा अपने जीवन में अवश्य लगाना चाहिए क्योंकि पर्यावरण को बढ़ावा देना यह हम सबका दायित्व है। वर्तमान समय में बारिश का असंतुलन इस बात का प्रमाण है कि, लगातार घटते जंगलों में इस समस्या से आज पूरा देश जूझ रहा है, ऐसे में आवश्यकता है पर्यावरण को बढ़ावा देने के लिए हर व्यक्ति को आगे आना चाहिए, यह बात तहसील पत्रकार संघ द्वारा स्थानीय शहीद पार्क में मुख्य अतिथि के रूप में नवागत एसडीएम एलएन गर्ग ने पौधारोपण करते हुए व्यक्त किए और हरियाली अमावस्या पर पौधारोपण भी किया। इस मौके पर तहसील पत्रकार संघ के अध्यक्ष मोहन पडियार, मनोज पुरोहित, चंदू राठौर, निर्मल व्यास, शान ठाकुर, नीलेश सोनी, राकेश गहलोत, तन्मय चतुर्वेदी, साबिर मंसूरी, तरुण चौधरी आदि पत्रकार उपस्थित रहे।

बामनिया में शासकिय कन्या स्कूल और स्वयं सेवकों ने किया वृक्षारोपण

हरियाली अमावस्या के अवसर पर वृक्षारोपण कर पर्यावरण को हरा-भरा करने और वृक्षारोपण के प्रति जागरूक करने के लिए शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बामनिया में हरियाली अमावस्या के शुभ अवसर पर वृक्षारोपण किया गया। जिसमें प्राचार्य आरके यादव एवं स्टाफ श्रीमती भूरिया, चौहान सर, वसुनिया सर, श्रीमती काग, श्रीमती गणावा, अशोक निनामा, शिवदत्त राठौर, सुश्री ममता गारवे, मावि के प्रधान पाठक राजेश कुमार झा, जन शिक्षक राजू निनामा द्वारा वृक्षारोपण किया गया।

संघ के स्वयं सेवकों ने भी किया वृक्षारोपण

वही हरियाली अमावस्या के अवसर पर आरएसएस के कार्यकर्ताओं के द्वारा वृक्षारोपण किया गया जिसमे बामनिया के संघ के स्वयं सेवक घनश्याम गुर्जर, संतोष बसोड, निलेश कटारा, अमरसिग डामर, गोपाल, अर्जुन, गोलू उपस्थित रहे।

श्री परिहार अखिल भारतीय नगारची समाज के प्रदेश महासचीव नियुक्त

माही की गूंज, सारंगी

अखिल भारतीय नगारची समाज द्वारा बैठक का आयोजीत किया गया था, जिसमें समाज के वरिष्ठ समाजजनो की उपस्थिती में प्रदेश कार्यकारिणी का गठन किया गया जिसमें प्रदेश महासचिव के पद पर सर्वसहमति से नगारची सुरेशचंद्र परिहार सारंगी को नियुक्त किया गया है। उक्त नियुक्ति पर समाजजनो व इष्ट मित्रो ने बधाई दी, परिहार ने बताया मैं समाज हित के कार्यो के लिए सदेव प्रयत्न शिल रहुगा ।

शांति समति की बैठक व्यापारियों से सहयोग मांगा

माही की गूंज थांदला

आगामी त्योहारों को देखते हुए हर बार की तरह ही औपचारिक रही शांति समिति की बैठक, कोरोना काल को देख काफी उम्मीद जताई जा रही थी। एक ओर जहाँ म.प्र. के पूर्व राज्यपाल लालजी टण्डन का निधन होने से प्रदेश में राजकीय शोक है, लेकिन प्रशासन उन्हें श्रद्धांजलि तक नही दे पाया। थांदला पुलिस द्वारा आयोजित शांति समति की बैठक में एसडीएम, एसडीओपी, बीएमओ, थाना प्रभारी सहित अनेक प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित थे वही नगर के प्रमुख व्यापारी, जनप्रतिनिधि एवं गणमान्य पत्रकार उपस्थित थे। कोरोना संकट के समय नगर में 5 एक्टिव केस होने से सभी को बैठक व पुलिस विभाग से काफी उम्मीदें थी। प्रशासनिक अधिकारियों ने व्यापारियों से सहयोग की अपील कर कहा कि वे रविवार व मंगलवार छोड़ स्वयं भीड़ पर नियंत्रण रखें व मास्क पहन कर ही व्यापार करें। यातायात व अतिक्रमण मुद्दों का कोई स्थायी हल पुलिस के पास आज भी नही है। उन्होंने केवल नगर के बाहर बड़े वाहनों को रोकने व बाहरी व्यापारियों को नगर ने व्यापार के लिये प्रतिबंधित करने की बात कर अस्थायी हल ढूंढने के प्रयास जरूर किया है। नगर में अनेक होटल संचालित हो रहे है वहाँ भी कुर्सी आदि बैठक व्यवस्था बन्द करने की बात भी पुलिस द्वारा की गई। शासकीय अस्पताल में मरीज के साथ एक व्यक्ति ही आये इसके लिये 100 डायल, पुलिस का एक जवान व नगर परिषद के कर्मचारियों को जिम्मेदारी दी गई जो शायद ही इस जिम्मेदारी को निभा पाये। नगर में कोरोना मरीज को ले जाने, सेम्पल लिए गए व्यक्तियों व कोरन्टीन एरिये के व्यक्तियों के घुमने पर भी चर्चा हुई जिसका उचित समाधान करने की बात की गई। कुल मिलाकर आगामी रक्षाबंधन, गणेशोत्सव, ईद आदि बड़े त्योहारों पर भीड़ पर अंकुश लगाने व नगर को शासन के नियम बताने के लिये आयोजित बैठक में सख्त कार्यवाही की बात जरूर की गई लेकिन अभी तक नगर में लगातार कोई भी मुहिम चली नही है।

खच्चरटोडी में कियोस्क संचालक निकला कोरोना पॉजिटिव

माही की गूंज, खच्चरटोडी

रविवार देर रात को खच्चरटोडी गांव में एक व्यक्ति की रिपोर्ट कोरोना पॉजिटिव आई। संक्रमित व्यक्ति कियोस्क संचालक है, संक्रमित व्यक्ति घर पर ही लोगो को पेसा देता था। खच्चरटोडी में कोरोना मरीजों की संख्या अब दो हो गई है। पिछले रविवार को इसी मरीज के घर के पीछे वाली गली में एक 55 वर्षीय व्यक्ति की रिपोर्ट पॉजिटिव आई थी, इसके बाद प्रशासन ने गली को सील कर कन्टेनमेंट एरिया घोषित कर दिया था। उसी वक्त कोरोना पॉजिटिव मरीज आने पर एहतियात के तौर पर कियोस्क सेंटर बदं कर दिया था कियोस्क संचालक के पॉजिटिव आने पर घर के आस-पास के इलाके को सील कर दिया गया।

सांप भी न मरे और लाठी टूट जाए

माही की गूंज, भामल

ग्रामीण अंचल में एक कहावत है कि सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे यानी उपलब्ध संसाधनों का कम से कम जोखिम में अधिकतम उपयोग हो लेकिन वर्तमान में सरकारी तंत्र में कहावत को ठीक उलट दिया गया है, सांप भी न मरे और लाठी टूट जाए यानी समस्या का समाधान भी न हो और खुद का मतलब भी निकल जाए। दूसरे शब्दों में काम भी न हो और काम करने का हल्ला मचा दिया जाए। कुछ ऐसा ही कारनामा थांदला विकासखंड में इन दिनों भामल के उपस्वास्थ्य केंद्र पर देखने को मिल रहा है। शासकीय पैसों का सदुपयोग होना चाहिए लेकिन अधिकारी और ठेकेदार मिलकर ऐसा काम कर रहे हैं कि, समस्या भी बरकार रहे और काम करने के नाम पर पैसा भी खर्च हो जाए।

मामला खवासा के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के अंतर्गत आने वाले उप स्वास्थ्य केंद्र भामल में बन रहे शौचालय निर्माण का है, यहां पर गर्भवती एवं प्रसुती महिला के लिए एक शौचालय बन रहा है, लेकिन शौचालय कहां बनना चाहिए और कहां बन रहा है। नियमानुसार शौचालय पीछे बनना चाहिए लेकिन भामल के उप स्वास्थ्य केंद्र पर शौचालय उप स्वास्थ्य केंद्र के ठीक आगे सड़क के किनारे बन रहा है, जबकि उप स्वास्थ्य केंद्र के पीछे भी पर्याप्त जगह है। इस संबंध में न तो सरपंच को कुछ पता है और न सचिव को वही पटवारी गोल-मोल बातेकर अपनी जावाबदेही की इतिश्री कर रहा है। शासन की ओर से ग्रामीण अंचलों में उप स्वास्थ्य केंद्र हेल्थ एंड वैलनेस सेंटर (आरोग्य केंद्र) है जिसमें लाईट फिटिंग, मरम्मत और प्रसूती हेतु आने वाली महिलाओं की सुविधाओं के लिए शौचालय निर्माण हेतु राशि आवंटित की गई है, जिसमें अधिकारियों की सांठ-गांठ व लॉकडाउन में आपदा को अवसर में बदलते हुए एक ही ठेकेदार ने जिले के कई केंद्रों का ठेका प्राप्त कर लिया है और अब निर्माण कार्य में भी नियमों को ताक पर रखा जा रहा है।

भामल में निर्माण कार्य के बारे में जब स्थानीय पटवारी से चर्चा की गई तो, पहले तो शौचालय की निर्माण की जमीन को लोक निर्माण विभाग (पीडब्लूडी) की बताया गया बाद में कहा गया कि, यह शासकीय तो कभी आबादी की तो कभी पंचायत के अंडर जमीन है बताता रहा। वही इस संबंध में सचिव ने भी पूरे मामले से अनभिज्ञता जाहिर की है।

भाई कुप पर चुना पोत कर खिंचवा रहा था फोटो, तब जाकर हुआ फर्जी कुप का खुलासा

सचिव और रोजगार सहायक की कारस्तानी से वर्ष 2008 में स्वीकृत होकर बन चुका कूप 2018 में फिर स्वीकृति होकर बन गया कागज पर

माही की गूंज, पेटलावद

ग्राम पंचायत में फैले भ्रष्टाचार की नई इबारत लिखता पेटलावद विकास खंड में फर्जी कपिलधारा कूप का बड़ा मामला सामने आया है।

विकास खण्ड की ग्राम पंचायते एक के बाद एक चुनोती पेश कर जवाबदारो का मुह चिढ़ा रहे हैं। भ्रष्टाचारो के नकाब पोश का खुलासा करने की गूंज की पहल के बाद ग्राम पंचायतों से ऐसे सैकड़ो मामले सामने आ रहे हैं जहां बिना काम के पैसा निकाल कर सरपंच-सचिव और अधिकारी अपनी जेब भर रहे हैं। मामला ग्राम पंचायत रताम्बा का है, जहां एक कूप पर चुना पोत रहे भाई को देखकर दूसरे भाई को शक हुआ कि, आखिर क्यो बिना वजह बरसात के समय मे चुना पोता जा रहा है, ग्राम रताम्बा के नंदू पिता रामचंद्र परमार ने अपने भाई सुखराम परमार के साथ वाली सामलाती भूमि में बने कुए को लेकर जब ग्राम पंचायत सचिव से पूछा तो सचिव ने बताया कि, सुखराम के नाम से वर्ष 2018-19 में कपिलधारा कूप स्वीकृत हुआ हैं, जिसका बकाया भुगतान करने के लिए कूप से साथ सुखराम का फोटो लेने है इसलिए कूप पर चुना पोता जा रहा है। कूप कब और कैसे स्वीकृत हुआ, इसकी जानकारी सामलाती खातेदार होने के बाद भी नही है न ही कूप में सुखराम की कोई स्वीकृति ली गई। जानकारी मिलने के बाद नंदू परमार ने अनुविभागीय अधिकारी पेटलावद को शिकायत कर बताया कि, ग्राम पंचायत रताम्बा के सरपंच-सचिव, ओर रोजगार सहायक ने मिलकर शासन को चुना लगाने के उद्देश्य से दो लाख रुपये का कूप भाई सुखराम के नाम से स्वीकृत कर दिया, जबकि कुप दस वर्ष पहले ही बन चुका है ओर पूरे कुप में कोई नया काम एक पैसे का नही किया गया। नंदू ने बताया कि, ग्राम पंचायत सचिव मोहन मावी, रोजगार सहायक भरत अरड द्वारा फर्जी मस्टर भरकर परिवार वालो की फर्जी मजदूरी की हाजरी भर कूप का भुगतान

निकालकर शासन को खुलेआम चुना लगाया जा रहा है।

वर्ष 2008 में स्वीकृत हो कर बन चुका है यह कूप

जनपत पंचायत से मिली भगत का आलम ये है कि, जिस कूप को वर्ष 2018-19 में सुखराम परमार के नाम से जिस नाकी वाले खेत पर स्वीकृति होकर वर्ष 2008 में सुखराम पिता रामचंद्र परमार के नाम इसी नाकी वाले खेत पर स्वीकृत होकर बनकर यह कूप बन चुका है और बनने के बाद से उक्त कूप से ही दोनों भाई सिचाई कर रहे हैं, लेकिन भ्रष्टो ने खाते में इसी कुप को नाम परिवर्तन के चलते बने हुए कुप पर दूसरा कुप कागज पर दर्शाकर स्चीकृती प्रदान कर राशि वर्ष 2018 से अब तक आहरण की जा रही है। जिसकी जानकारी परिवार तक के सदस्यों को नही है, यहाँ तक कि, सामलाती खातेदार नंदू और उसके परिवार ने कूप निर्माण में मजदूरी तक नही की।

जादूगर रोजगार सहायक भरत अरड का है कमाल

ग्राम पंचायत रताम्बा से ग्रामीणों की शिकायत से दो बार भ्रष्टाचार हटाये गए रोजगार सहायक भरत अरड का जादू साफ नजर आता है जिसने सरपंच से लेकर जनपद तक अपनी सेटिंग बिठा रखी है और अधिकारियों की मिलीभगत से ग्राम पंचायत में भ्रष्टाचार कर रहा है और अपनी काली कमाई का बड़ा हिस्सा अधिकारियों और नेताओं को परोस कर वापस रताम्बा पंचायत में आ जाता है, ताकि इसके काले कारनामे उजागर न हो, पूर्व में गूंज में ही रोजगार सहायक भरत अरड को दो बार पंचायत से हटाए जाने और सेटिंग से उसी पंचायत में वापस आने का पूरा खुलासा किया गया, जिसके बाद भी मामला जिलाधिकारीयो के संज्ञान में आने के बाद भी मामले में कोई कार्रवाई नही हुई हैं ऐसे भ्रष्ट रोजगार सहायक को जिले के भाजपा का एक बड़ा नेता अपना सरंक्षण देकर भ्रष्टाचार में भागीदार बन रहा है जिसका खास विरोध ग्राम रताम्बा के लोग घर जाकर भी कर चुके हैं।

कूप स्वीकृति में सब काम सेटिंग से

ग्राम पंचायत के कार्यो में इस प्रकार की सेटिंग आम है, कूप निर्माण कार्य की स्वीकृति के लिए किसी प्रकार का मौका जाँच उपयंत्री द्वारा नही किए जाने की गंभीर लापरवाही सामने आई है, मिली जानकारी के अनुसार ग्राम पंचायत के माध्यम से हितग्राही के जरूरी कागज जनपद वेरिफाई करने के बाद वर्ग जोड़ा जाता है, जिसके बाद उपयंत्री द्वारा स्टीमेट बना कर जनपद को भेजा जाता है, वहा से एई द्वारा टीएस जारी कर ग्राम पंचायत को भेजा जाता है ओर ग्राम पंचायत एएस कर मस्टर जारी करवाती है। पूरी प्रक्रिया में जनपद के अधिकारी और कार्य के उपयंत्री द्वारा कोई मौका नही देखा जाता, कार्य के ले आउट के लिए भी ग्राम पंचायत के बुलाने पर ही उपयंत्री जाता है नही तो उपयंत्री द्वारा कार्य शुरू करने की जानकारी तक नही ली जाती। कार्य के भुगतान में भी शासन के नियमो अनुसार कार्य की प्रगति के अनुसार मजदूरी ओर मटेरियल का भुगतान किया जाता है, मजदूरी का भुगतान मस्टर के द्वारा किया जाता है। हितग्राही के खाते का वेंडर जोड़ा जाता हैं, मटेरियल के भुगतान के जो बिल ग्राम पंचायत द्वारा लगा उसका भुगतान कार्य के उपयंत्री द्वारा निर्माण कार्य की पुष्टि के बाद किया जाता है। इतनी सारी प्रक्रिया होने के बाद भी भ्रष्ट अपनी कागजी कार्रवाई पूरी कर कागज पर निर्माण बताकर पैसे फर्जी तरीके से निकाल लेते है, ग्राम पंचायत रताम्बा में ये ऐसा अकेला मामला नही है ऐसे कई कूप है जो या तो बने हुए हैं या फिर पहले से स्वीकृत होकर बन चुके हैं उनको दोबारा स्वीकृत कर फर्जीवाड़ा सबकी मिली भगत से किया जा रहा है।

नवापाड़ा की महिला के संपर्क में आये मेडिकल संचालक के बाद एक और युवती और एक महिला कोरोना पॉजिटिव निकली

माही की गूंज, बामनिया, गौरव भंडारी

विगत हफ्ते में ग्राम में एक के बाद एक तीन मामले कोरोना के सामने आने से भय का माहौल बन गया हैं, इससे पहले भी ग्राम में एक मामला सामने आ चुका है जिससे अब बामनिया के आसपास कोरोना के कुल चार मामले हो गए है। बामनिया के पास मुल्थनिया पंचायत के नवापाड़ा फलिये में निवासरत महिला रतलाम में इलाज के दौरान कोरोना पॉजिटिव आई, इसके बाद बामनिया का मेडिकल संचालक कोरोना पॉजिटिव आया, स्वास्थ्य और प्रशासनिक अमला नवापाड़ा फलिये और बामनिया में पहुँच कर महिला ओर मेडिकल संचालक को इलाज के लिए जिला चिकित्सालय भेज कर परिवार के लोगो के सेम्पल लिए ओर कन्टेनटमेंट झोन तैयार किया। जिन लोगो के सेम्पल लिए गए उनको होम क्वारंटाइन किया गया है। नवापाड़ा से लिये गए 17 सेम्पल में से एक ओर 17 वर्षीय युवती की रिपोर्ट पॉजिटिव आई

बाकी सभी रिपोर्ट नेगिटिव आने से लोगो ने ली राहत

वही मेडिकल संचालक के संपर्क में आई एक महिला जो की उसकी मां ही है भी कोरोना पॉजिटिव आई है ,सभी को इलाज के जिला चिकित्सालय भेजा गया हैं। स्वास्थ्य अमला अब नवापाड़ा ओर बामनिया में पॉजिटिव आई महिला की ट्रेवल हिस्टी की जानकारी जुटा कर कुछ और लोगो के सेम्पल जाँच के लिए ले सकता है। बामनिया ओर नवापाड़ा के मिला कर 23 सेम्पल लिए गए थे जिसमें से 03 रिपोर्ट को छोड़ कर बाकी सभी रिपोर्ट नेगिटिव आई जिससे नगर वासियो सहित प्रशासन ने भी राहत की सांस ली हैं। इससे पहले बड़ोदा में पॉजिटिव आई महिला के नेगिटिव हो कर घर लौटने के साथ-साथ संपर्क में आये सभी परिवार वालो की रिपोर्ट नेगेटिव आ चुकी हैं।

गूंज असर: गूंज पोर्टल में मामला उजागर होने पर सेल्समेन पति, बना तुलावटी व सचिव बनी सेल्समेन

समूह की अध्यक्ष को दरकिनार कर सचिव उसके पति के साथ मिलकर गरीबों का अनाज खाकर कर रहे कालाबाजारी की कलेक्टर को की शिकायत

माही की गूंज चं.शे.आजाद नगर, अभिषेक गुप्ता

गरीबो का अनाज खाने वालो को किसी भी स्थिती में भख्सा नही जाएगा की बाते सरकारे भले कहती है, पर धरातल पर देखे तो सहकारी संस्थाओ में गरीबो का अनाज भ्रष्ट जमकर खा रहे है और शिकायत होने के बाद भी अधिकारी कार्यवाही तो ठिक इस ओर देखने तक की हिमाकत नही कर रहे है। ऐसा ही कुछ एक मामला आदिवासी बाहुल्य जिला अलीराजपूर की चन्द्रशेखर आजाद नगर जनपद पंचायत के ग्राम गेरुघाटी पंचायत कोहिवाव का एक मामला सामने आया है।

आजाद नगर (भाभरा) जनपद की ग्राम पंचायत कोहिवाव के ग्राम गेरूघाटी में महिलाओ का एक लक्ष्मी स्वयं सहायता समूह चल रहा है, बतादे कि, लक्ष्मी स्वयं सहायता समूह द्वारा 2018 में सहकारीता में आवेदन कर शासकिय उचित मुल्य की दुकान हेतु मांग की गई थी उक्त मांग पर 19 जुन 2018 को कार्यालय अनुवीभागिय अधिकारी राजस्व चन्द्रशेखर आजाद नगर ने पत्र क्रमांक 1180/खाद्य/2018 का जारी कर मध्यप्रदेश सार्वजनीक वितरण प्रणाली 2015 के अर्न्तगत समूह के नाम शासकीस उचित मूल्य की दुकान आवंटित की गई। समुह की विपयण सहकारी संस्था की उचित मूल्य की दूकान आवंटित होते ही सम्बंधीत अधिकारीयो की साठ-गाठ के साथ गरीबो को दिए जाने वाले खाद्यान्न की कालाबाजारी की शुरूआत समूह की सचिव सुगना पिता सवेसिंग वास्कले के इशारो पर शुरू कर दिया गया। उक्त कालाबाजारी पर समूह की अध्यक्ष सेलबाई पति करमसिंग वास्कले ने आपत्ति लि तो समुह अध्यक्ष सेलबाई को समूह की समस्थ गतिविधी से ही बाहर निकाल दिया और पुरे समूह को सुगना ने अपने अंडर में लेकर मनमानी के साथ पिछले दो वर्षो से गरीबो को मिलने वाले अनाज में सेंघ लगाकर जमकर कालाबाजारी की जा रही है, जिसकी शिकायत के बाद भी कोई कार्यवाही अधिकारीयो द्वारा आज तक नही की गई।

समूह की अध्यक्ष सेलबाई पति करमसिंह ने 17 जुलाई को मय विडियो प्रुफ के साथ अलीराजपुर जिला कलेक्टर को शिकायत दर्ज कराई कि, गेरूघाटी की उक्त शा.उचित मूल्य की दुकान लक्ष्मी स्वयं सहायता समूह अध्यक्ष सेलबाई पति करमसिंह वास्कले के समूह में ली गई थी लेकिन दुकान आवंटन के 10 दीन बाद ही समूह अध्यक्ष सेलबाई को ही समूह से हटाकर उचित मूल्य की दुकान सुगना पिता सवेसिंग ने दुकान पर कब्जा कर लिया। समूह की अध्यक्ष सेलबाई ने शिकायत में बताया कि, सुगना की शादी भी अन्य गांव में कर दि गई है चुकी अब वह दुसरे क्षेत्र से आति है बावजुद वह दो साल से अकेली ही दुकान चला रही है सुगना द्वारा समूह की किसी भी सदस्य को किसी प्रकार की कोई जानकारी नही दि जाती है, वही दुकान भी अपनी मर्जी से खोलती एवं बंद करती है तथा सुगना अपने पति को ही दुकान का सेल्समेन बनाकर खाद्ययान्न का पैसा मूल्य से अधिक लिया जाता है, पोस मशीन में से जो पर्ची निकाली जाती है वह ग्राहको को नही दी जाती है, जिसकी शिकायत भी पूर्व में खाद्य विभाग को दर्ज करवा दी लेकिन उनके द्वारा भी कोई कार्यवाही नही की गई कि शिकायत कलेक्टर कार्यलय में की गई।

माही की गूंज को मय विडीयो प्रुफके साथ समुह की अध्यक्ष सेलबाई ने बताया कि, समस्त समूह के सदस्यों की देख रेख मे दुकान का सुचालन करं अनाज का वितरण करना था, परन्तु इस सोसाइटी में इस समूह की सचिव सुगना ने अधिकारीयो से साठ-गाठ कर अपने पति के साथ मिलकर अनाज वितरण में भारी घोटाला किया जा रहा है। समूह की अध्यक्ष सेलबाई के अनुसार समूह की ही सचिव सुगना द्वारा झगड़ा कर अध्यक्ष व समूह की सदस्यो को सोसाइटी का संचालन नही करने दिया जा रहा है और जबरन समूह की सचिव सुगना और उसका पति जो ग्राम कुक्षी से आकर जबरन सोसाइटी चला रहा है और पोस मसीन से पर्ची भी नही निकाल कर दे रहा है, बार.बार एक ही पर्ची पर सभी ग्राहकों की एंट्री कर रहा है जिसके कारण कितने राशन की इंट्री हो रही है ओर राशन पर्ची में कितना अनाज लिखा जा रहा है उसका मिलान नही किया जा रहा है, लोगो को राशन भी कम दिया जा रहा ह। सेलबाई ने गूंज को बताया कि, प्रत्येक राशन कार्ड में संख्या के अनुशार फ्री चावल और दाल भी नही दी जा रही है। समूह की अध्यक्ष सेलबाई ने मांग की है कि, जबरन अनाज वितरण की जांच हो, साथ ही राशन कार्ड धारियों की शिकायत भी दर्ज की जावे ओर अनाज के भ्रष्टाचार की भी जाँच हो और फर्जी तरीके से सोसाइटी संचालन के लिए सुगना ओर उसके पति के खिलाफरिपोर्ट दर्ज कर अभी तक किए गए भ्रष्टाचार की वसुली कर उनको जेल भेजा जाए।

समूह अध्यक्ष सेलबाई ने की कलेक्टर को शिकायत

19 जुन 2018 को समूह को आवंटित दुकान के बाद समूह अध्यक्ष को निकालकर की जा रही थी कालाबाजारी

माही की गूंज यूट्यूब न्यूज चैनल पर मामला उजागर होने के बाद पोस मशीन बदलकर सेल्समेन पति को तुलावटी बनाकर सुगना बनी सेल्समेन

मामला: आजाद नगर जनपद क्षेत्र की गेरूघाटी में शा.उ.मू. की दुकान पर दो वर्ष से की जा रही कालाबाजारी, शिकायत के बाद भी कार्यवाही नही

गूंज असर

उक्त मामला माही की गूंज ने रविवार को अपने यूट्यूब न्यूज चैनल पर प्रकाशित किया था जिसके बाद सम्बंधित अधिकारी के साथ लक्ष्मी स्वयं सहायता समूह की अध्यक्ष सेलबाई को दरकिनार करने वाली व गरीबो का अनाज खाकर दो वर्ष से कालाबाजारी करने वाली समूह की सचिव सुगनाबाई व उसका पति भी हरकत में आए और सर्वप्रथम गेरूघाटी उचित मूल्य की दुकान पर की जा रही अनियमित्ता को त्वरित ही बदलकर पोस मशिन को बदलकर साफ सुथरी पर्ची निकाली जा रही है, साथ ही कालाबाजारी करने वाली सचिव सुगना ने पुर्व में अपने पति को सेल्समेन बनाकर अधिकारीयो से साठ-गाठ कर कालाबाजरी कर रही थी पर जैसे ही सेलबाई ने कलेंक्टर को शिकायत की और मामला माही की गूंज के सामने आया और मामले को यूट्यूब न्यूज चैनल पर उजागर होते ही अपने आप को सही साबित करने के लिए अपने पति को सेल्समेन से तुलावटी बनाकर स्वयं सेल्समेन बन उक्त शा. दुकान पर सेल्समेन बन खाद्यान वितरीत करने लग गई है। सुगना व उसका पति अपने आप को राजा हरिशचन्द्र बनने का प्रयास किया जा रहा है पर देखना यह है कि, भ्रष्ट खाद्य एवं सम्बंधित अधिकारी अपने कर्तव्यो का निर्वहन किस तरह से करते है?

उक्त संबन्ध में आजिवीका मिशन के प्रभारी हुरसिंग धाकड ने बताया कि, सचिव सुगनाबाई की अनियमित्ताए सामने आई है जिसपर जॉच हेतु एसडीएम साहब को प्रतिवेदन हमारी ओर से दिया गया है।

खाद्य अधिकारी राहुल मंडलोई ने बताया उक्त कालाबाराजी का मामला सामने आया है जॉच चल रही है पुरी जॉच होने पर एसडीएम साहब को जॉच प्रतिवेदन एसडीएम को साहब को सोपा जावेगा।

ऐ कमेश तू हसते-हसते आखिर क्यों हो गया हम सबसे अलविदा

माही की गूंज , रायपुरिया

शनिवार की शाम को रामनगर का कमेश पाटीदार (26) अपनी कार से ड्राइवर के साथ रायपुरिया के लिए निकला, लेकिन होनी को कुछ और ही मंजूर था। कमेश पाटीदार के लिए अपने घर से रायपुरिया का यह सफर अंतिम सफर साबित हुआ और रामनगर निवासी राजाराम पाटीदार के कुल का इकलौता दीपक बुझ गया। कमेश अपने घर से लगभग 100 मीटर ही पहुँचा था कि, अनियंत्रित कार एक पेड़ से जाकर टकरा कर दुर्घटनाग्रस्त हो गई, जिसमे कमेश को गम्भीर चोट आई, तुरन्त कमेश को हॉस्पिटल ले जाया गया लेकिन हॉस्पिटल पहुचने से पहले ही कमेश के प्राण निकल चुके थे।

कमेश की आकस्मिक दुर्घटना मे निधन होने से गांव में मायूसी छा गई, कमेश भाजपा नेता व पाटीदार समाज के तहसील अध्यक्ष लक्ष्मीनारायण पाटीदार का भतीजा था। कमेश पाटीदार का अचानक दुनिया से अलविदा हो जाने से क्षेत्र में दुख की लहर छा गई। कमेश होनहार मिलनसार ओर हंसमुख मिजाज का लड़का था, दुर्घटना में कमेश की मौत की खबर उसके जितने भी दोस्तों ने सुना तो वह आश्चर्यचकित हो गए क्योंकि शनिवार के दिन सुबह से लेकर शाम तक रायपुरिया में उसे अपनी मोबाइल की दुकान पर देखा गया था, सभी से हंस कर बात कर रहा था, इसलिए किसी को यकीन नहीं हो रहा था की उसकी असमय मौत हो गई। कमेश की एक मासूम पुत्री भी है जिस पर से पिता का साया उठ गया। पत्नि के साथ परिवार एवं इस्टमित्रो का आज भी रो-रोकर बुरा हाल हो रहा है और किसी को अब भी भरोसा नही हो रहा कि, कमेश हमारे बिच नही है।

ईट भट्टों का अतिक्रमण स्कूल बाउंड्रीवाल में कर रहा खलल उत्पन्न

माही की गूंज, खवासा

शासकीय बालक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय खवासा स्कूल की अधूरी बाउंड्रीवाल का टेंडर होने के बाद भी बाउंड्रीवाल बनाने में ईट भट्टेधारियों का अतिक्रमण खलल पैदा कर रहा है।

सर्वे नंबर 1257/2 की 4 हेक्टेयर की स्कूल की भूमि की सीमा पर बाउंड्रीवाल कार्य करना है जिसमें से करीब 40 प्रतिशत रोड साइड से लेकर एल साइड में बाउंड्रीवाल पिछले दो टेंडर में बनाई गई हैं। वही अधूरी पड़ी बाउंड्रीवाल बनाने हेतु आ.जा. विकास विभाग द्वारा टेंडर जारी कर ठेका दे दिया गया। मार्च माह में प्रभारी प्राचार्य के आवेदन पर बाउंड्रीवाल बनाने हेतु सीमांकन करवाया गया। स्कूल भूमि की सीमा के अंदर तक ईट भट्टे लगाकर ईट का निर्माण किया जा रहा है। सीमांकन के दौरान ईट भट्टे के आगे तक स्कूल की जमीन निकल रही थी, जिस पर चुना भी डालकर ठेकेदार की उपस्थिति में प्रभारी प्राचार्य द्वारा सीमांकन करवा दिया गया था। परंतु बाउंड्रीवाल बनाने हेतु 4 दिन पूर्व ठेकेदार द्वारा गड्ढे खुदवाए गए जिसमें ईट भट्टे की ओर ठेकेदार द्वारा स्कूल की मुख्य सीमा को छोड़ ईट भट्टो के अंदर मोडकर गड्ढे खुदवाकर बाउंड्रीवाल बनाने के कार्य करने की शुरुआत की इतिश्री की गई। गड्ढे खोदने के बाद कुछ स्थानीय व्यक्ति एवं स्कूली छात्र ने आपत्ति ली कि, ईट भट्टे के अतिक्रमण को संरक्षण देकर ठेकेदार स्कूल की भूमि को छोड़कर बाउंड्रीवाल बना रहा है, जिसकी शिकायत भी तहसीलदार को की गई। वही इस हेतु मीटिंग भी कुछ स्थानीय लोगों द्वारा की जाकर स्कूल की पूरी जमीन की सीमा पर ही बाउंड्रीवाल बनाएं जाने की मांग की जा रही है, तो वही ईट भट्टेधारी अपने प्रभाव के साथ स्कूल की जमीन छोड़ने को तैयार नहीं हो रहे है।

सबसे बड़ी बात जब लोगों ने स्थानीय सरपंच को इस संबंध में मौके पर वस्तु स्थिति देखने बुलवाया तो सरपंच ने कह दिया मैं नहीं जानता आपमें जोर हो तो आप अतिक्रमण हटवाकर स्कूल की पूरी भूमि पर बाउंड्रीवाल बनवा लो। सरपंच की उक्त बात पर लोगों का कहना है कि, सरपंच स्वयं ने पुराने तालाब में बड़े पैमाने पर मिट्टी डालकर तालाब में ही खेत बनवाकर अतिक्रमण कर लिया है, जिसके लिए वह इस कार्य में हस्तक्षेप नहीं कर रहा है। अगर सरपंच यहां हस्तक्षेप करें तो ईट भट्टेधारी अतिक्रमणकर्ता खुलकर सरपंच के अतिक्रमण का भांडा फोड़ने में पीछे नहीं रहेंगे। ?

खैर शिकायतों का दौर जारी है देखना है कि, स्कूल बाउंड्रीवाल में स्कूल छात्र व कुछ स्थानीय व्यक्ति जो भविष्य के हित को देखते हुए स्कूल की पूरी सीमा में बाउंड्रीवाल की मांग कर रहे हैं, उनको जीत हासिल होती है या वे जो किसी भी मानवीयता को नहीं समझ सिर्फअपने निजी व्यवसाय को महत्व देकर अतिक्रमण कर अपना कब्जा जमाए बैठे हैं की जीत होती है।

कोरोना पॉजिटिव मरीज को ले जाने में हुए भेदभाव को लेकर शांति समिति की बैठक में मीडिया हुआ मुखर

माही की गूंज थांदला

नगर में मंगलवार को पुलिस थाना परिसर में शांति समिति की बैठक का आयोजन हुआ। शांति समिति की बैठक कुल मिलाकर कोरोना काल से संबंधित मुद्दे को लेकर ही हुई। जिसमें नगर में एक साथ निकले दो कोरोना पॉजिटिव मरीजों को झाबुआ कोविड केयर सेंटर ले जाने में हुए भेदभाव को लेकर मीडिया काफी मुखर रहा। पूरी बैठक में यही मुद्दा छाया रहा। जिसके जवाब में बैठक में मौजूद सिविल अस्पताल थांदला के बीएमओ डॉ. कमलेश परस्ते ने कहा कि, हम लोग उनको लेने गए थे परंतु उनके परिजन उनको भेजने के लिए तैयार नहीं हुए, उसी वक्त झाबुआ के एक कोरोना मरीज की स्थिति गंभीर हो गई थी इसलिए हम उनको नहीं ले गए। जबकि एमजी रोड़ के इस कोरोना मरीज के न जाने के बाद पार्श्वनाथ मार्ग के दूसरे कोरोना मरीज को लेकर थांदला से निकलने में एक घंटे से भी ज्यादा का वक्त हो गया था, तो प्रशासन की यह बात मीडिया और नगर की जनता को हजम नहीं हो रही है। यदि दूसरे मरीज को ले जाने में एक घंटे से ज्यादा का वक्त लगा तो फिर झाबुआ के मरीज की इमरजेंसी का कोई मतलब नहीं निकला। इसी बात को लेकर प्रशासन का यह तर्क किसी के गले नहीं उतर रहा।

थांदला प्रशासन का यह दोहरा रवैया नगर में चर्चा का विषय बना रहा। चौराहों पर चल रही चर्चा में लोगों ने कहा कि, प्रशासन पर राजनीतिक दबाव के चलते कोरोना मरीजों को ले जाने में भेदभाव किया गया। जबकि पहली कोरोना मरीज 35 वर्ष की है, तो वहीं दूसरी मरीज 65 वर्ष की है और अन्य बीमारी से भी पीड़ित है। फिर भी प्रशासन उनको झाबुआ स्थित कोविड केयर सेंटर पर ले गया। आखिर क्यों? जबकि दूसरी महिला मरीज के परिजनों ने भी होम क्वारंटाइन करने की मांग प्रशासन से की थी मगर प्रशासन नहीं माना।

इमरजेंसी केस में एंबुलेंस की जरूरत थी, इसलिए छोड़ दिया - बीएमओ डॉ. परस्त,

हकीकत: पहले पेशेंट के बाद दूसरे पेशेंट को ले जाने में लगा एक घंटे से ज्यादा का वक्त, तो फिर इमरजेंसी कैसी ?

एमजी रोड़ के कोरोना पेशेंट को लाने में मशक्कत करता प्रशासन।

शांति समिति की बैठक में बीएमओ डॉ. परस्ते सफाई देते हुए।

जिले का पहला मामला

थांदला में सोमवार को कोरोना पेशेंट को कोविड सेन्टर ले जाने में हुए भेदभाव की यह जिले में पहली घटना है। जबकि अब तक जिले में 60 से ज्यादा केस निकल चुके है और प्रशासन ने हर किसी को सख्ती के साथ कोविड केयर सेंटर में पहुंचाया है। परंतु थांदला की घटना से हर कोई हैरत में है।

नई गाइड लाईन का दे रहे हवाला

उक्त महिला के परिजन अखबार की कटिंग के साथ प्रशासन की नई गाइड लाईन का हवाला दे रहे थे। परंतु यदि कोई नई गाइड लाईन का आदेश हुआ है, तो भी एक मरीज को साथ ले गए और दूसरे को घर पर ही छोड़ना किसी के गले नहीं उतर रहा है।

काउंसलिंग करने में टाइम लगा

थांदला बीएमओ डॉ. कमलेश परस्ते ने बैठक में सभी से कहा कि, उस महिला के परिजन नहीं मान रहे थे, इसलिए स्वास्थ्य विभाग को उनकी काउंसलिंग के लिए समय चाहिए था। परंतु इमरजेंसी के चलते हम उन्हें साथ नहीं ले गए। अब उनके परिजन तैयार हैं, एंबुलेंस आने पर उन्हें भेज दिया जाएगा। डॉ. परस्ते की बात को एक बार भी सही मान ले तो क्या कोरोना पॉजिटिव मरीज को होम क्वारंटाइन के बाद भी 24 घंटे से ज्यादा खुले तौर पर छोड़ दिया जाना चाहिए? जबकि उसके खुद के घर में दो कोरोना मरीज पॉजिटिव पाए गए हैं। क्या बाकी के परिवार के सदस्यों को पॉजिटिव होने के लिए प्रशासन रास्ता देख रहा है? सवाल कई है... मगर प्रशासन का यह जवाब केवल अपनी नाकामी छुपाने के लिए काफी नहीं है।

एक ही गाड़ी के चलते आई समस्या

डॉ. कमलेश परस्ते ने कहा कि, जिले में कोरोना मरीजों को लाने-ले जाने के लिए एक ही गाड़ी है। अन्य वाहनों का इस्तेमाल नहीं किया जाता है इसलिए इमरजेंसी केस में मरीज को छोड़ना पड़ता है। अनलॉक-2 के बाद जिले में लगातार कोरोना मरीजों की संख्या प्रतिदिन बढ़ रही है। ऐसे में यदि एक ही गाड़ी है तो अलग-अलग जगह जाने में काफी दिक्कत आती है। जनप्रतिनिधि और प्रशासन को अन्य गाड़ियों की व्यवस्था करना चाहिए ताकि कोरोना मरीजो को लाने-ले जाने में कोई दिक्कत न हो।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, अलका भटेवरा द्वारा काम्पेक प्रिन्टर्स प्रायवेट लिमिटेड, 3/54, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 499, बाजना मार्ग, गणेश मंदिर के सामने, खवासा, तहसील थांदला, जिला-झाबुआ (म.प्र.) से प्रकाशित। प्रधान संपादक- संजय भटेवरा, संपादक- धर्मेन्द्र पंचाल । मोबाइल नं. -95898-82798 (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र झाबुआ रहेगा) आरएनआई टाइटल कोड नंबर- एमपीएचआईएन-76422